समकालीन साहित्य, संस्कृति,
कला और विचार का मासिक

उत्तर प्रदेश

जनवरी—2024, वर्ष 49

₹ 15/-

डॉ. रंजना जायसवाल की एक कविता

अपने हिस्से का घर

उसके पास जवाब थे
हर सवाल के
हर बात में
जीत वो जाती थी
अलमारियां भरी थीं
छोटी बड़ी ट्रॉफियों से
कोई वितर्क न था
उसके तर्क के सामने
पर वो हर बार हार जाती थी
बंद दरवाज़ों के पीछे
सारी संवेदना घुटने टेक देती थी
सारी चतुराई दम तोड़ देती थी
सिर्फ एक उस वाक्य के आगे
दरवाज़े खुले हैं हमेशा
जा सकती हो तुम अपने घर
शायद मर्दों के पास

औरतों को हराने का
यह पहला और अंतिम हथियार होता है
जिसे सुनकर वह हर बार
बिना लड़े ही हार जाती है।
कहीं दरक जाता है
गहरे उनका रिश्ता
सूख जाता है
प्रेम का समंदर
क्योंकि वह नहीं ढूंढ पाई थी अब तक
उस घर में अपने हिस्से का घर

◆

पता : लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश–231001
मो. : 9415479796

अनुक्रम

कला

- सहरिया स्वांग और नृत्यों में दिखाई देती है..... ❑ प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा / 3

कहानी

- जय जिज्जी ❑ संध्या रियाज़ / 7
- ओह ! यह कैसी ज़िन्दगी ❑ रीतादास राम / 15
- सुखमनी ❑ डॉ. अलका अस्थाना 'अमृतमयी' / 19

कविताएँ

- डॉ. रंजना जायसवाल की एक कविता ❑ आवरण–2
- विजय सिंह का गीत ❑ आवरण–3
- कविता विकास की पाँच कविताएँ / 23
- अशोक अंजुम के दोहे / 25
- विमलेश शर्मा की तीन कविताएँ / 27

पुस्तक समीक्षा

- इतिहास से निकली कहानियाँ ❑ डॉ. उर्मिला साध / 29

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 49 ❑ अंक 59
❑ जनवरी, 2024

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **शिशिर**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

सम्पादकीय परामर्श : ❑ **अंशुमान राम त्रिपाठी**
अपर निदेशक, सूचना
❑ **डॉ. मधु ताम्बे**
उपनिदेशक, सूचना
❑ **डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह**
सहा. निदेशक, सूचना

प्रभारी सम्पादक : ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**
उपसम्पादक, सूचना

सहयोग सम्पादक : ❑ **कुमकुम शर्मा**
आवरण : **अंतरिक्ष**
भीतरी रेखांकन : **सिद्धेश्वर**

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 8960000962, 9412674759
ईमेल : upmasik@gmail.com

दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रुपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
—सम्पादक

आवर्तन

विगत वर्ष सन् 2023 हमारे देश में ही नहीं अपितु दुनियाभर में सामाजिक हलचलों से भरा रहा। इन सामाजिक, राजनैतिक महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा, बल्कि यूँ कहें तो रचनात्मक साहित्यिक उपलब्धियों से भरपूर रहा 2023। 23 अगस्त को भारत के चंद्रयान–3 ने चन्द्रमा पर लैंडर विक्रम को उतारा। इसके साथ ही भारत चन्द्रमा पर मानव रहित वाहन उतारने वाला चौथा देश बना। 28 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नए संसद भवन का उद्‌घाटन किया। प्राकृतिक आपदाओं के चलते देश शोक में भी डूबा। संक्षेप में कहें तो सुख दुःख के उतार चढ़ाव के साथ प्रतिवर्ष की भांति यह वर्ष भी बीत गया। राजधानी दिल्ली में 9 और 10 सितम्बर, 2023 को 18वें जी–20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। इस शिखर सम्मेलन का विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम्' था, जिसका अर्थ है पूरी दुनिया एक परिवार है। यह पहला मौका था जब भारत ने जी–20 देशों के शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इस दौरान विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में जी–20 देशों में अफ्रीकी संघ स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करने का निर्णय लिया।

साहित्यिक उपलब्धियों के लिए गत वर्ष महत्वपूर्ण रहा। कथा यात्रा को यदि देखें तो इसमें आज कई पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। हर्ष का विषय है कि नए कथाकारों की भाषा में अधिक परिपक्वता है। कहानी की दुनिया में सन् 2023 में लगभग दो दर्जन संग्रह प्रकाशित हुए। हिन्दी के वरिष्ठ कवि कथाकार उदय प्रकाश का 'अन्तिम नींबू' वरिष्ठ लेखिका नासिरा शर्मा का 'सुनहरी उँगलियाँ', राजी सेठ का कहानी संग्रह 'बाहरी लोग', कवि कथाकार देवी प्रसाद मिश्र का अनूठा कहानी संग्राह, 'मनुष्य होने के संस्मरण', ममता सिंह का 'किरकिरी', विमल चन्द्र का 'भारत मंत्र' वरिष्ठ कथाकार स्वयं प्रकाश का मृत्योपरांत 'आएंगे अच्छे दिन भी' सूर्यबाला जी का 'बहनों का जलसा' प्रकाशित हुए। नए कथाकारों में रूपा सिंह का प्रथम संग्रह 'दुखां दी कटोरी सुखां दा छल्ला', शिरीष खरे का 'नदी सिंदूरी', कुमार अम्बुज का 'मजाक' तथा अवधेश प्रीत का नया कथा संग्रह 'अथ कथा बजरंग बली' प्रकाशित हुए।

यह वर्ष जहाँ रचनात्मक उपलब्धियों से भरपूर रहा वहीं हमने अनेक साहित्यकारों को खोने से भारी क्षति भी महसूस की है, जिनमें से डॉ. यात्री, शरद दत्त, राजुरकर राज, सुरेश सलिल, कृष्ण बिहारी मिश्र, वेद प्रताप वैदिक, हरीश्चन्द्र चंदोला, मिलान कुंदेश, वीरेन्द्र कुमार मेंदीरत्ता, इम्तियाज अहमद, जॉन बी. गुडड्न, आग्नेय, रमेश कुन्तल मेघ तथा जयन्त महापात्रा हैं। इन सभी लेखकों को उत्तर प्रदेश परिवार की तरफ से विनम्र श्रृद्धांजलि।

और अन्त में सोहनलाल द्विवेदी की इन पंक्तियों के साथ आप सभी पाठकों को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्वागत ! जीवन के नवल वर्ष
आओ, नूतन–निर्माण लिए,
इस महा जागरण के युग में
जाग्रत जीवन अभिमान लिए,
दीनों दुखियों का त्राण लिए
मानवता का कल्याण लिए
स्वागत ! नव युग के नवल वर्ष !
तुम आओ स्वर्ण–विहान लिए।

अपनी प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत करवाते रहिये, ताकि हम आपके लिए आपकी रुचि के अनुरूप अंक तैयार कर सकें।

● सम्पादक

सहरिया स्वांग और नृत्यों में दिखाई देती है जीवन की उमंग

❑ प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा

भारत की जनजातीय संस्कृति और साहित्य अथाह है। यह मानवीय सभ्यता की अक्षय निधि है। अनेक जातीय स्मृतियों, पुराज्ञान, देवमाला, व्रत–पर्व–त्यौहार, आख्यान, इतिहास, जीवन मूल्यों और संवेदनाओं के साथ इनकी अंतर्क्रिया निरंतर जारी है। भूमि, जन और संस्कृति के जैविक समुच्चय और अपनत्व का संसार लोक में निरन्तर विस्तार पाता है। मूलतः लोक एवं जनजातीय संस्कृति भारतीय संस्कृति को गढ़ती है, जिसमें विमुक्त, घुमंतू और अर्ध घुमन्तू समुदाय की भी अविस्मरणीय भूमिका रही है। सहस्राब्दियों से इन सबकी सक्रिय भागीदारी और जैविक आपसदारी से हमारी संस्कृति निरन्तर संवर्धित होती आ रही है। विभिन्न जनजातीय समुदायों के मध्य सहरिया जनजाति की अपनी विशिष्ट पहचान रही है। भारत सरकार ने पचहत्तर जनजातियों को विशेष संरक्षित जनजातियों का दर्ज़ा दिया है। इनमें सहरिया जनजाति प्रमुख है। मध्य प्रदेश में सहरिया, भारिया और बैगा को विशेष संरक्षित जातियों का दर्ज़ा मिला हुआ है।

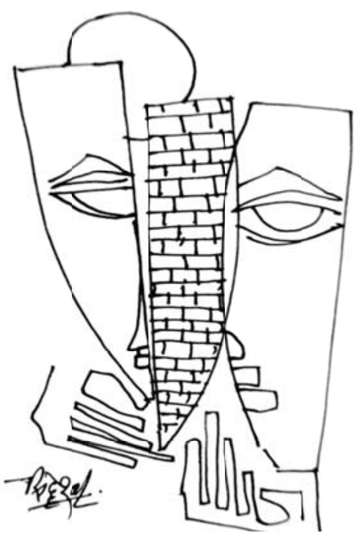

सहरिया जनजाति का विस्तार क्षेत्र अन्य जनजातियों के छोटे क्षेत्रों की तुलना में भिन्न प्रकार का है। मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों तक विस्तार लिए इस जनजातीय समुदाय का परिवार पितृसत्तात्मक होता है। मध्य प्रदेश के उत्तर–पश्चिमी जिलों में यह जनजाति फैली हुई है, इनमें आधुनिक ग्वालियर एवं चंबल संभाग के जिले प्रमुख हैं। इन संभागों के जिलों में इस जनजाति की जनसंख्या का लगभग पिचासी प्रतिशत हिस्सा निवास करता है। शेष भाग भोपाल, सागर, रींवा, इंदौर और उज्जैन संभागों में निवासरत है। राजस्थान के पूर्वी भाग में हाड़ौती अंचल के बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में सहरिया समुदाय के लोग बहुलता से रहते हैं।

मध्यप्रदेश के चंबल और ग्वालियर संभाग के सहरियाओं पर राजस्थानी संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव है। पूरा क्षेत्र राजस्थान से लगा हुआ है। महिलाओं का पहनावा राजस्थानी है। पुरुष साफा या पगड़ी राजस्थानी शैली में बाँधते हैं। राजस्थान के अनेक लोक देवता इनकी आस्था के केंद्र हैं। मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के सहरिया बहुल क्षेत्रों से सटे उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में भी सहरिया जनजाति के लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं। उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक सहरिया ललितपुर जिले में हैं। मालवा–हाड़ौती के मध्यवर्ती वन और पहाड़ों में ये बहुलता से निवास करते हैं। पुराने दौर में यह समस्त क्षेत्र वनाच्छादित था, जहाँ यह जनजाति शिकार और

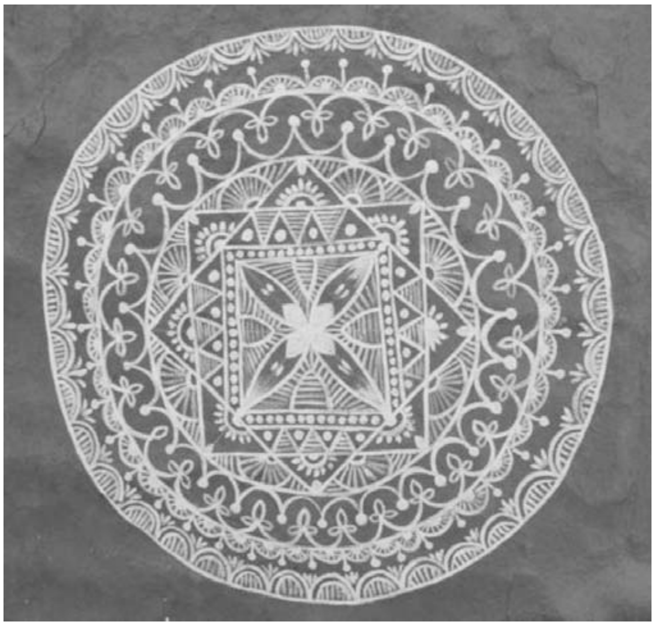

वनोपज संचयन से अपना जीवनयापन करती थी, किंतु अब अधिकांश सहरिया या तो छोटे किसान हैं या मजदूर या वनोपज संग्राहक। इन रूपों में वे अपने संघर्षमय जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। इनका रहन–सहन, रीति रिवाज और अधिकांश धार्मिक मान्यताएँ क्षेत्र के अन्य लोक समुदायों जैसी ही हैं। इनमें गोदाना गुदाने और मांडना बनाने की विशिष्ट परंपराएँ अभी भी प्रचलित हैं। सहरिया समुदाय का नृत्य और अभिनयमूलक स्वांग अपनी खास पहचान रखता है। विभिन्न प्रकार के भित्तिचित्रों और मांडनों से ये अपने वन्य, पर्यावरणीय और मांगलिक सरोकारों को व्यक्त करते हैं। कारसदेव पशुओं में गो रक्षक के साथ लोकरक्षक देवता माने गए है। भाद्रपक्ष की चतुर्थी को रात के बारह बजे उनका जन्म होना मानकर इस दिन इनकी विशेष पूजा की जाती है। इनकी गाथा विशेष गीत शैली–गोटों या गोठों के रूप में गाई जाती है। भक्त रात भर ढांक (डमरू) जैसी आवाज़ के साथ विचित्र धुनों में गोटें या गोठे (गीत) गाते हैं। इनमें कारसदेव के जन्म से लेकर बाल्यावस्था, युवावस्था के शौर्य का सरस वर्णन सुनने को मिलता है।

सहरिया समुदाय लोक साहित्य, संस्कृति और परम्परा की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है। सहरिया समुदाय द्वारा विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा अनिष्ट निवारण और कल्याणमय जीवन की कामना के साथ ही विभिन्न संस्कारों, पर्व और त्यौहारों के अवसर पर की जाती है। मध्य एवं पश्चिमी भारत के प्रमुख लोक देवताओं पर एकाग्र लोक साहित्य, बहुविध कलाभिव्यक्तियों के साथ ही उनका व्यापक असर सहरिया एवं लोक समुदायों पर दिखाई देता है। उनकी वाचिक अभिव्यक्तियों को हम कण्ठानुकण्ठ में जीवन्त पाते हैं। पश्चिम एवं मध्य भारत में बहु लोकप्रिय रामदेव जी, देवनारायण जी, तेजा जी, कारसदेव सहित कई लोक देवताओं से जुड़ा लोक साहित्य सहरिया समुदाय की वाचिक परम्परा में प्रवहमान है। यह साहित्य अनुश्रुति, इतिहास और लोक–संस्कृति की जैविक अंतर्क्रिया का विलक्षण दृष्टांत है। लोक–देवता साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ युग जीवन और पर्यावरण की विविध छवियां सहज उपलब्ध हैं। विविध जाति–समुदायों से जुड़े विशिष्ट प्रसंग और घटनाओं में ऐतिहासिक सन्दर्भ बिखरे पड़े हैं। उनकी सूक्ष्म पड़ताल हमें अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों तक ले जाती है। सहरियाओं के देवलोक से जुड़े वाचिक साहित्य के माध्यम से इतिहास और जातीय स्मृतियों की अनेकानेक परतें उद्घाटित होती हैं।

सहरिया जन की अपनी विशिष्ट नृत्य शैलियाँ हैं, विशेष तौर पर अभिनयमूलक कला स्वांग उन्हें अन्य जनजातीय समुदायों से पृथक करती हैं। वे रूपांकन कलाओं में पर्यावरणपरक भित्तिचित्रों और मांडने के लिए जाने जाते हैं, जिन्हें विभिन्न अवसरों पर बनाया जाता है। सहरिया समुदाय अपने मिट्टी के घरों की दीवारों और फर्श पर मांडना चित्रण करते हैं। सहरिया के मांडना डिजाइन उनके जीवन के पवित्र और प्रकृतिपरक परिदृश्य दोनों को दर्शाते हैं। खड़िया मिट्टी और गेरू मिट्टी के साथ–साथ, उनके चित्रों में अन्य रंग भी शामिल होते हैं, जिनमें काली मिट्टी या चारकोल से बने काले और भूरे रंग शामिल होते हैं। ये आकृतियाँ उनके पारंपरिक आदिवासी नृत्य स्वांग को दर्शाती हैं, जो आमतौर पर होली के दौरान उनके नाग देवता – तेजाजी महाराज के साथ किया जाता है। सहरिया मांडना चित्रण में गोत्रज को भी दर्शाया जाता है, जो कुल देवताओं के मुख्य विषय पर आधारित पेंटिंग है। राजस्थान में बसे सहरिया मानते हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बेटा कुंवारा रहता है या नहीं, लेकिन अंगना (आंगन) को कभी भी कोरा नहीं छोड़ना चाहिए। सहरिया जनजाति ने नृत्य की कई शैलियों का विकास किया है, जैसे सांग युगल नृत्य है। इस नृत्य में स्त्री व पुरुष दोनों द्वारा भागीदारी की जाती है। इंद्रपरी नृत्य सहरिया जनजाति द्वारा रागिनी गीत पर किया जाता है। विवाह के अवसर पर इस नृत्य का आयोजन किया जाता है। शिकारी नृत्य सहरिया जनजाति के पुरुषों के द्वारा किया जाता है। यह मुख्य रूप से बारां जिले की किशनगंज

तथा शाहबाद तहसील में किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष शिकार का नाटक करते हैं तथा शिकार हो जाने पर उसके चारों ओर नृत्य करते हैं। बिछवा नृत्य सहरिया जनजाति की केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसमें महिलाएं समूह बनाकर नृत्य करती हैं। इसी प्रकार झेला नृत्य बारां जिले की शाहबाद तहसील में स्त्री और पुरुषों द्वारा खेतों में फसल की पकाई के समय किया जाता है। लहंगी नृत्य भी सहरिया जनजाति की स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

नृत्य–अभिनयमूलक स्वांग सहरिया समुदाय की विशेष पहचान है। यह नृत्य ढोल, नगारी और मटकी की थाप पर प्रस्तुत किया जाता है। स्वांग एवं नृत्य प्रदर्शन के दौरान हारमोनियम, ढोलकी, मंजीरा आदि लोक वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं। शिव, राम, तेजाजी, दुर्गा और हनुमान जैसे हिंदू देवता उनके प्रदर्शनों के केंद्र में होते हैं। होली के माह में स्वांग नृत्य बड़े उल्लास से किया जाता है। नर्तक खुद को मंडलियों में व्यवस्थित कर लेते हैं और वे स्वांग प्रस्तुतीकरण के लिए गाँव–गाँव यात्रा करते हैं। स्वांग में महिला परिधान में पुरुष होता है जो पुरुष कलाकारों के इर्द गिर्द नृत्य प्रस्तुत करता है। जंगली वेशभूषा में नृत्य के दौरान इनके हाव भाव बहुत लोगों को आकर्षित करते हैं। कलाकार अपने सिर और कूल्हों को पत्तों से सजाते हैं और अपनी देह को अत्यधिक आकर्षक रंगों से रँगते हैं। इसमें पुरुष ही स्त्रीवेश धारण करते हैं। ये उमंगपूर्वक फाग नृत्य का आनंद लेते हैं। लोक देवता तेजाजी और रामदेवरा से जुड़े प्रसंगों पर आधारित नृत्य विशेष रूप से करते हैं। ये चंग और ताशा वाद्यों का प्रयोग अधिक करते हैं। होलिका स्वांग फागुन महीने में रचा जाता है और इसके कलाकार उसी के आधार पर नृत्य की प्रस्तुति देते दिखाई देते हैं। भस्मासुर नृत्य दीपावली के आसपास शुरू होता है और दो महीने तक कलाकार अपने इलाके में जगह–जगह की प्रस्तुति देते हुए भ्रमण करते हैं। इसके अलावा कालिका नृत्य भी है, जिसकी प्रस्तुति नवरात्रि के दौरान दी जाती है।

राजस्थान में बहुप्रचलित बगड़ावत की लोक गाथाएँ सहरियाओं में गाई जाती है, जिसमें लोक देवता देवनारायण जी और उनके पूर्वज बगड़ावत भाइयों के मनोहारी आख्यान निबद्ध हैं। सहरिया एवं अन्य समुदायों द्वारा देवनारायण जी गौ, भेड़, बकरी सहित पशुधन और जल स्रोतों के रक्षक और संवर्धक के रूप में सुपूजित हैं।

सहरिया समुदाय में गुरु की विशेष महिमा मानी गई है। निर्गुण उपासना की दृष्टि से गुरु को परमात्मा से

साक्षात्कार का माध्यम माना गया है। एक पद देखिए, जहाँ सतगुरु को जीवन में नया रंग लाने वाले रंगरेज के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हर्रर की सुरति और फिटकरी की निरति से रंग चोखा हो गया है :

मेरे सतगुरु आये रंगरेज
चुनरिया धन की रंगि तो गई।
कैरे काये की हर्र, काये की फिटकरी रे,
सोई काये कौ डारो जामें बोरू,
चुनरिया धन की रंगि तो गई।
कै रे सुरति की हर्रर निरति की फिटकरी रे,
ध्यान कौ डारौ जामैं बोरू
चुनरिया धन की रंगि तो गई।

विभिन्न देवताओं के प्रति सहरियाओं की आस्था को मूर्त करने वाले अनेक मेले भी स्थान–स्थान पर भरते हैं। इन मेलों में ये लोग आराध्य देव के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति के साथ उमंग, उत्साह और बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत होकर भाग लेते हैं। सहरिया समुदाय के मेलों में कपिलधारा, सीताबाड़ी, तेजाजी के मेले आदि प्रमुख हैं। कालेश्वर महादेव, गोपेश्वर महादेव, शिवरात्रि, फलौदी माता, दूधिया खेरी माता, बालाजी, रामनवमी, दशहरा आदि के मेले भी

महर्षि वाल्मीकि वनवासी थे, सहरिया समुदाय के लोग इन्हें अपने ही समाज का सहरिया मानते हैं, वे उन्हें जनजातीय पुरुष मानते हैं। सहरिया महर्षि वाल्मीकि को ईश्वर तुल्य समझते हैं। बड़ी ही श्रद्धा भाव से उनकी पूजा की जाती है। वाल्मीकि मंदिर में महर्षि की नई प्रतिमा स्थापित कर दी गई है, साथ ही इस मंदिर

विशेष उल्लेखनीय हैं, जिनका आयोजन इनके क्षेत्रों में समय–समय पर होता है। सीताबाड़ी सहरियों का प्रमुख मेला है। सीताबाड़ी प्राकृतिक परिवेश में स्थित एक सुंदर स्थान है, जहाँ आम के छायादार वृक्ष हैं। यहाँ पर सात कुण्ड हैं, जिनमें बारह माह ठण्डा पानी बहता रहता है। सीताकुण्ड, लक्ष्मण कुण्ड और सूरज कुण्ड यहाँ के प्रमुख कुण्ड हैं। सूरज कुण्ड यद्यपि आकार में छोटा है, परन्तु अत्यंत सुंदर है। यहाँ का जल अत्यंत निर्मल एवं पारदर्शी होता है। इन कुण्डों में नहाकर लोग पुण्य प्राप्त करते हैं। लवकुश कुण्डों को भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। यहाँ पर सभी धर्मों के सम्बन्ध रखने वाले लोग आते हैं, जिनकी संख्या लगभग पचास हजार से ज्यादा होती है। यहाँ पर सोमवती अमावस्या को स्नान किया जाता है। सीताबाड़ी में निकट ही वाल्मीकि आश्रम भी है, जहाँ वाल्मीकि मंदिर भी है। चूंकि

का प्रबंधन सहरिया समाज के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार सीताबाड़ी एक ऐसा पवित्र धार्मिक स्थान माना गया है, जहाँ पर प्रतिवर्ष लगने वाले इस मेले में सहरिया लोग दूर–दूर से यहाँ आते हैं। मेले में हजारों की संख्या में लोग आनंद प्राप्त करते हैं। यह मेला वैशाखी अमावस्या को लगता है। कपिल धारा का मेला कार्तिक पूर्णिमा पर आयोजित किया जाता है, जिसमें असंख्य संख्या में सहरिया जन भाग लेते हैं। सहरिया समाज का प्रसिद्ध घुघर मेला पौष माह में आयोजित किया जाता है।

स्पष्ट है कि सहरिया अत्यंत सीमित संसाधनों में गुजर बसर करने के बावजूद कला एवं संस्कृतिमय जीवन जी रहे हैं। वे संसार की सर्जना के लिए ईश्वर के प्रति गहरी श्रद्धा भक्ति भाव रखते हैं। सहरिया समुदाय में सौंदर्य और मनोरंजनपूर्ण कलाभिव्यक्तियों के साथ देवी देवताओं से सम्बद्ध गीत, कथा, गाथा, स्वांग आदि की उपस्थिति उन्हें जीवन की एकरसता और जड़ता से मुक्त करती है। ये सभी उनकी जातीय स्मृतियों और इतिहास के अनेक महत्वपूर्ण अध्यायों से हमें रूबरू करवाते हैं। सहरिया जनजाति के विपुल लोक साहित्य, कला रूपों और संस्कृति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि धरातलीय और समावेशी दृष्टिकोण से ही भारत की जनजातियों और उनके आस्था–विश्वासमय जीवन पर विचार किया जाना चाहिए। ◆

पता : सृजन, 407, साईंनाथ कॉलोनी, सेठी नगर, उज्जैन 456 010 मध्यप्रदेश
मो. : 09826047765

जय जिज्जी

❑ संध्या रियाज़

जय जिज्जी नाम से उनको सभी जानते थे लेकिन मां बाप ने उनका नाम जया कुंअर रखा था। अपने माँ बाप की इकलौती बेटी थीं, इनकी एक बड़ी सी शानदार कोठी थी, ये कोठी मोहल्ले की सबसे बेहतरीन कोठी थी, जिसके अंदर जाते ही लगता है जैसे किताबों और फर्नीचर का शोरूम है, ऊंची–ऊंची दीवारें और उन पर उतने ही कद के आईने जिनके फ्रेम में चांदी की परत नक्काशी के जड़ी थी– शानदार झूमर लटके हुए, बैठने के लिए खूबसूरत मूढे और सोफे करीने से सजे और बीच में कांच की बड़ी सी टेबल घर की शोभा बढ़ा रही थी। घर में सभी नौकर चाकर घर की बेटी जया कुंअर को "जया जिज्जी" कहते थे लेकिन लगातार बोलते–बोलते अब सब उन्हें "जयजिज्जी" बोलने लगे थे। मां–बाप की इकलौती बेटी, घर पर थोड़ी तालीम मिली बाद में स्कूल जाने को कहा गया तो इन्होंने साफ मना कर दिया, स्कूल जाने का कभी कोई शौक नहीं हुआ क्यों कि बच्चे उनका बहुत सांवला रंग देख के उन्हें चिढ़ाते और वो कुछ कह न पाती सो अंगूर खट्टे थे उन्होंने बोला स्कूल बेकार है घर में पढ़ेंगे इसलिए मां बाप ने घर पर उनकी पढ़ाई पूरी कराई थी। जय जिज्जी का कोई भाई या कोई बहन नहीं थी इक्लौती थीं तो बचपन से उनकी सारी ख्वाहिशें पूरी होती थीं। लड़कियां वो बेल होती है जो बिना पानी धूप के बढ़ जाती है जय जिज्जी भी देखते–देखते अठरह साल की हो गयीं। बूढ़े पुराने कहते हैं जवानी में घोड़ी भी हसीन लगती है लेकिन जय जिज्जी बिलकुल भी खूबसूरत और हसीन नहीं लगती थीं। जय जिज्जी कद में तो बड़ी अच्छी थीं लेकिन रंग बहुत ही ज्यादा सांवला था इतना सांवला कि वह काली लगती थीं, मोटी सी नाक, बहुत बड़ी–बड़ी आंखें और लंबे काले बाल। ईश्वर ने इस परिवार को सब कुछ दिया था, सब कुछ बेहद खूबसूरत बस औलाद देने में कटौती कर दी थी। जय जिज्जी रंग से जितनी काली दिल से उतनी गोरी, बहुत सीधी–सादी, भोली, इतनी सीधी की कोई कुछ भी कह के बेवकूफ बनाकर उनसे कुछ मांगता है तो वह बिना कुछ देखे भाले तुरंत लाकर दे देती थीं। उनकी इस आदत के बारे में मां बाप को पता था इसलिए वह हमेशा समझाते रहते की दुनिया को समझो बेटा लोगों को समझो उनकी फितरत को समझो तुम बड़ी हो गई हो 19 साल की होने वाली हो कल को

तुम्हारी शादी होगी कैसे जिंदगी बिता पोओगी।

लेकिन जय जिज्जी को इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वो सुबह 5:00 बजे भोर होते ही उठ जातीं, नहाती धोती और सीधा अपने कृष्ण जी के मंदिर में पहुंच जाती है जो उनके घर का एक हिस्सा था जय जिज्जी का सुबह–शाम का काफी समय घर के कोने में बने कृष्ण मंदिर में ही गुजरता। ना जाने उनको कृष्ण जी से इतना ज्यादा लगाव क्यूँ था ..इतना लगाव था कि उन्होंने कभी अपनी शादी के बारे में सोचा ही नहीं। आज के युग में अगर वह ना होती और मीरा के युग में होती है तो लोग उनकी तुलना शायद मीरा से करते लेकिन आज के वक्त में लोगों ने उनको बेवकूफ समझ लिया था। सबको लगता था ना घर के कामों में इंटरेस्ट लेती हैं, न पढ़ाई में इंटरेस्ट है, न घूमने फिरने में उन्नीस साल की उम्र में आज कौन सी लड़की भगवान के मंदिर में कपूर जलाती है, मंदिर सजाती है और सुबह शाम नियम से उनकी आरती गाती दिखाई देती हैं। जय जिज्जी को आरती गाने का बहुत शौक था उन्होंने कभी नहीं सोचा कि वो कैसा गाती हैं, सुर में है या बेसुरी हैं बस लगन लगाके, बड़ी तन्मयता के साथ और समय के नियम का पालन करते हुए रोज ध्यान पूर्वक आरती जरूर गातीं, अब ये अलग बात है कि आज हम बाहरी खूबसूरती देख के किसी को अच्छा कहते हैं– सुर से गाने वाले को उस्ताद कहते हैं लेकिन आरती करना तो पूजा थी, आस्था थी और इस आस्था के सच्चे अर्थ को देखते तो जय जिज्जी बहुत सुन्दर गाती थीं लेकिन हिंदी शब्दों की आरती साउथ इंडियन शब्दों के उच्चारण सी लगती थी– जय जिज्जी के लिए रक्खे नौकर उनकी नकल उतार उतारके हँसते लेकिन जय जिज्जी को कोई फर्क नहीं पड़ता उनके और कृष्ण जी के बीच में अपना एक तारतम्य था, वो कुछ भी कहती थी और कृष्ण जी समझ जाते थे लेकिन मां–बाप को ये बात समझ में न आती। जितना उनकी बेटी ने कृष्ण को माना था उससे ज्यादा उन्होंने कृष्ण को माना था तभी उनके घर के प्रांगण में कृष्णजी का इतना अच्छा और सुन्दर मंदिर बनवाया था लेकिन कृष्ण जी ने उनकी प्रार्थना आज तक नहीं सुनी थी, औलाद तो हुयी लेकिन आज उसकी उम्र को देखते हुए कोई रिश्ता नहीं आया था, जो भी लोग आए लालच को देखते हुए आए उनकी बड़ी हवेली को देखते हुए लेकिन उसके बाद भी जब "जया" यानि हमारी जय जिज्जी को मिले तो बुरा सा मुंह बनाकर चले गए।

जय जिज्जी को इस बात का दुःख था और जब सारे घर के लोग उनको कुछ बातें सुनाते तो जय जिज्जी बोलती कि इसमें मेरी क्या गलती है जैसी मैं हूं ऐसा तो भगवान ने बनाकर मुझे भेजा है अब लोग इसे पसंद नहीं करते तो इसमें तो भगवान का दोष है मेरा नहीं और हो सकता है कोई कारण हो उनका मुझे ऐसा बदसूरत बनाने का ....हाँ ठीक है मैं किसी के घर की एक सुंदर सी बहू नहीं हो सकती हूं तो क्या मैं अपने घर की बदसूरत बेटी बन के तो रह सकती हूं न ?? क्या प्रॉब्लम है अगर कोई ना ब्याह के ले गया है मुझे ..नहीं बनाना चाहता कोई मुझे अपना जीवन साथी तो ..तो क्या करें हम ?? वो कभी–कभी अपनी माँ के गले लग के बहुत रोती भी और कहती कि माँ मैं इस घर को छोड़कर ना जाऊं ... ना जाऊं ससुराल तो क्या आराम से अपने घर नहीं रह सकती हूं ? जय जिज्जी के इस प्रश्न पर मां–बाप हमेशा निरुत्तर हो जाते हैं उनके पास जया के प्रश्नों का कोई उचित उत्तर नहीं था।

जय जिज्जी को इस बात का दुःख था और जब सारे घर के लोग उनको कुछ बातें सुनाते तो जय जिज्जी बोलती कि इसमें मेरी क्या गलती है जैसी मैं हूं ऐसा तो भगवान ने बनाकर मुझे भेजा है अब लोग इसे पसंद नहीं करते तो इसमें तो भगवान का दोष है मेरा नहीं और हो सकता है कोई कारण हो उनका मुझे ऐसा बदसूरत बनाने का ....हाँ ठीक है मैं किसी के घर की एक सुंदर सी बहू नहीं हो सकती हूं तो क्या मैं अपने घर की बदसूरत बेटी बन के तो रह सकती हूं न ?? क्या प्रॉब्लम है अगर कोई ना ब्याह के ले गया है मुझे ..नहीं बनाना चाहता कोई मुझे अपना जीवन साथी तो ..तो क्या करें हम ?? वो कभी–कभी अपनी माँ के गले लग के बहुत रोती भी और कहती कि माँ मैं इस घर को छोड़कर ना जाऊं ...ना जाऊं ससुराल तो क्या आराम से अपने घर नहीं रह सकती हूं ? जय जिज्जी के इस प्रश्न पर मां–बाप हमेशा निरुत्तर हो जाते हैं उनके पास जया के प्रश्नों का कोई उचित उत्तर नहीं था। असल में वो जो कुछ भी कह रही थी उसके हिसाब से सही ही था।

घर में जय जिज्जी की दोस्त आया जाया करतीं थी वैसे उन्हें कोई जया से खास रुचि नहीं थी, सहेलियां ज्यादातर इसलिए भी आती थी कि वो जब भी वह जया के पास आती थी, उनकी दावत जरूर हो जाती थी, जया की मां इस बात का हमेशा ध्यान रखती है कि जया की दोस्त खुश होकर जाएं और जब जया दोबारा उनको बुलाए तो खुशी–खुशी आने को सब तैयार हो जाएँ। अब शायद उनको ही पता लग गया था कि जया की शक्ल सूरत को लेकर कोई खुशी से दोस्ती नहीं करता है कोई ना कोई लालच में जुड़ा रहता है, वैसे देखा जाए तो दुनिया का दस्तूर है बहुत खूबसूरत लोगों को जल्दी दोस्त मिल जाते हैं भले ही सीरत अच्छी ना हो लेकिन अच्छी सीरत वाले अगर देखने में बदसूरत हो तो अपने भी उनसे दूर–दूर रहते हैं। एक तरफ जय जिज्जी की उम्र बढ़ रही थी तो दुसरे तरफ मां बाप की उम्र बढ़ रही थी, उनके पास कोई निदान नहीं था कि आखिर वह अपनी बेटी को कैसे ब्याहें, उन्होंने नई कुंडली भी बनवाई, अपने कई रिश्तेदारों से कहा कि कोई रिश्ता मिले तो बताएं, लेकिन रिश्तेदारों ने दबी जुबान में आकर यही कहा कि जिस–जिस को जया की फोटो हम दिखाते हैं वह मना कर देता है कि बाकी सब तो दूर की बात है जीवन साथी कम से कम ऐसा तो हो कि पति उसे रोज देखने की ललक रखें, जया को जीवनसाथी मिलना बहुत मुश्किल था। जया की उम्र बढ़ रही थी ...देखते–देखते छः साल और गुजर गए उन्नतीस साल की हो चुकी थी जय जिज्जी। ऐसी कोई जगह ना रह गई थी जहां मां बाप ने उसका रिश्ता तय करने की कोशिश न की हो। कई रिश्तेदारों ने यहाँ आना बंद कर दिया कि क्या करें चाह के भी कुछ नहीं कर पाते इन्हीं में जय जिज्जी की एक दूर की मौसी भी थीं ...वैसे झाँसी में रहती थी लेकिन पति की मौत के बाद इसी शहर में उनका बेटा उनको ले आया था एक छोटी सी नौकरी के चलते, वो कभी–कभी दुःख बांटने यहाँ आती जाती, उनको जय जिज्जी अच्छी लगती थीं क्यूँ वो उनकी सूरत से नहीं सीरत से प्यार करती थीं लेकिन उनको भी पता था समाज में बहू के गुण अवगुण बाद में दिखते हैं रिश्ते तो सूरत देख के पक्के होते हैं उन्होंने ने भी बहुत कोशिश की थी जय जिज्जी के लिए रिश्ता ढूँढने की लेकिन कुछ नहीं हुआ था।

अब तो जय जिज्जी ने ही साफ मना कर दिया था कि अब रिश्ता मिले भी तो खुद मना कर दें क्योंकि उसकी किस्मत में शादी और जीवन साथी नहीं है और अब वो अपना सारा जीवन अपने कृष्णा को दे देना चाहती थीं। मां बाप ये नहीं चाहते थे लेकिन उनकी बेटी ने धीरे–धीरे अपने ऊपर साध्वी रंग चढ़ा लिया। अब रंगीन, प्रिंटेड, जॉर्जट की खूबसूरत से खूबसूरत चांदी के बर्क वाली साड़ियां, जो उसने जिद करके अपने मम्मी पापा से मंगवाई थीं उनकी जगह बिना प्रिंट की, सूती साड़ियां पहनना शुरू कर दिया। उनके घर में जेवरों से बक्से भरे हुए थे लेकिन उसको कोई जेवर न भाता, एक तो उसकी शक्ल ही कुछ ऐसी थी कि कोई जेवर उस पर अच्छा ही नहीं लगता दूसरा उसका मन जैसे इन सारी चीजों से भर चुका था। अब होता यह था कि जब उसकी कोई दोस्त आती है तो वह कुछ ना कुछ चीज उठाकर किसी ना किसी को दे देती। दोस्तों का लगातार आना जाना लगा रहता। मां–बाप समझ चुके थे उनकी जोड़ी हुई संपत्ति यूं ही जानी है लेकिन सारी संपत्ति होते हुए भी सबसे कीमती वस्तु उनकी अकेली रह जाने वाली थी, वो थी उनकी जीती जागती बेटी जया।

जया के पिता अपनी बेटी का ये हाल नहीं देख पा रहे थे सो उनकी तबीयत खराब होने लगती है और देखते–देखते अचानक एक दिन वो चल बसते हैं। कहते हैं अगर पति की मृत्यु जल्दी हो जाए तो पत्नी का जीना बड़ा मुश्किल होता है सो जया की माँ अपने पति के मरने के बाद ज्यादा दिन नहीं जी पाईं, दो–तीन साल और जैसे–तैसे निकले अम्मा का भी देहांत हो गया।

अब बड़ी हवेली में जय जिज्जी अकेली थी पहले वो कृष्ण जी के मंदिर में सुबह और शाम जाया करती थी अब सारी हवेली सूनी रहती है और उसका पूरा समय कृष्ण के मंदिर में बीत जाता, सोने के दिल की जय जिज्जी का न किसी ने दिल देखा न उनकी अच्छाइयाँ, शक्ल सूरत देख के सबने उनका तिरस्कार कर दिया था लेकिन माँ बाप के मरते ही रिश्तेदारों और पड़ोसियों के अलग रंग सामने आने लगे। सीधी साधी जय जिज्जी को कहाँ ये समझ में आने वाला था। अकेली औरत चाहे विधवा हो या कुँवारी दुनिया का नजरिया उसे देखने का एक दम बदल जाता है, सक्षम

हो तो बदचलन का तमगा दे देंगे और लाचार हो तो कैसे फायदा उठाया जा सकता है इसमें लग जाते हैं। अक्सर ऐसा ही होता है बस वैसा ही जय जिज्जी के साथ होने लगा था। ताकीदों की पर्चियां उनको देने कोई न कोई आ जाता मगर ये कोई न पूछता कि क्या उलझन है क्या मुश्किल है हम कुछ कर सकते हैं क्या ? हमेशा का एक तकिया कलाम सा शब्दों का एक वाक्य जाते जाते दे जाते– "कुछ हो तो बताना हम हैं ये न समझना कि तुम अकेली हो"। लेकिन असल में जय जिज्जी बहुत अकेली हो चुकी थीं।

दिन का काफी समय मंदिर में बीत जाता है वक्त का कुछ पता ही नहीं लगता, घर की बहुत सारी कीमती चीजें जय जिज्जी ने यूं ही बांट दीं, उसे कभी इन चीजों ने आकर्षित भी नहीं किया था न वो इन्हें सहेज के रखना चाहती थी– आखिर उसके किस काम की थीं– इन्हें बेचा भी जा सकता है ये उसके दिल में कभी आया ही नहीं सो उस दौरान कई रिश्तेदार आये और अपनी अपनी पसंद की चीज हंसते हँसते ले गए– कि चलो ठीक है अगर तुम्हारी किसी काम की नहीं तो हम ले जाते हैं– सो धीरे–धीरे काफी सामान अपने आप खत्म सा हो गया था। जय जिज्जी को लगता चलो अच्छा हुआ किसी के काम तो आएगा हम क्या करते सब रख के। अब घर में ज्यादातर फर्नीचर जो दीवार से सटा हुआ था वो बचा था, दीवारों पर नक्काशीदार कुछ पेंटिंग बचीं थीं, जिन के फ्रेम में चांदी की परत चढ़ी थी, बड़े बड़े खूबसूरत फानूस, ताम्बे के गंगाल जिनमें खूबसूरत पौधे लगे थे, कश्मीरी कालीन सब जा चुके थे बस मंदिर की मूर्तियां रह गई थीं और मंदिर के बीच में बना हुआ एक छोटा सा सिंहासन रह गया था जिसमें चांदी और सोने की पर्थ लगी थी।

धीरे–धीरे जय जिज्जी की उम्र अब पैंतीस के करीब हो चुकी थी लेकिन वह दिखने लगी थीं जैसे पैतालीस की हों। अकेली जान ना खाने का कोई इंतजाम न कोई पूछने वाला। अम्मा के समय से जय जिज्जी की एक मौसी उनके साथ ही रहती थीं, अज्जा मौसी, जिनका दुनिया में कोई न था वो जय जिज्जी की पैदाइश के समय से साथ थी जिनको सब अज्जा मौसी कहते थे, अब वो अपना और जय जिज्जी का खाना बना लेती थी और दोनों एक दूसरे की साथी थी .... एक–एक करके नौकर भी छोड़ छोड़ के निकल गए। अज्जा मौसी ने जय जिज्जी को बचपन से देखा था। जय जिज्जी जवानी में भी खूबसूरत नहीं लगती थी और अब ? अब तो और भी बदतर लगने लगी थी लेकिन उस सांवले काले रंग के बीच एक शांति, एक सुकून था जैसे आसमान अमावस्या के दिन सुकून से होता है सन्नाटे का दूसरा नाम सुकूं था जय जिज्जी के लिए। जय जिज्जी को जैसे पहले से पता था कि वो एक भंवर के बीच में है और एक दिन एक तूफान आएगा और उनको उसमें डूब जाना है और तब कोई कुछ नहीं कर पाएगा...सो वो निश्चिंत थीं, सभी खूबसूरत सम्भावनाओं से परे इसलिए किसी भी तरह का कोई भी दुःख, किसी भी तरह की कोई भी चिंता उनके चेहरे पर नज़र नहीं आती थी बहुत ही शांति थी।

पहले जब वह पंद्रह साल की थी तो उनकी हंसी नहीं रुकती थी इतना हंसती थी कि उनके काले चेहरे पर सफेद दांत मोतियों की तरह चमकते थे जैसे मखमल के काले तकिए में किसी ने सफेद रंग के मोती जड़ दिए हों लेकिन अब जय जिज्जी की हंसी भी गुम हो चुकी थी, ना वो हंसती थी ना वो रोती थी, ना किसी पर चिल्लाती थी, वो एकदम शांत थी बस आरती के समय उनकी आवाज सुनाई देती थी .... हां कभी–कभी अपने कृष्ण से मंदिर में बैठे–बैठे बातें करती थीं– जैसे कृष्ण जी उनके सामने बैठे हैं और उनसे बातें कर रहे हैं... जी–जी अच्छा..तो कन्हैया आप ये कह रहे हैं– वो उनके जवाब भी खुद ही दे देती थी ...अच्छा अब आप हमसे यह कहेंगे की सुध क्यूँ बिसरा रहें हैं हम ...अरे अब आप तो सब जानते हैं फिर भी ऐसा कह रहे हैं, बाहर बैठी अज्जा मौसी को लगता है कि जय जिज्जी धीरे–धीरे पागल होने लगी हैं तो वो बाहर से ही उन पर चिल्लाती है की जया बाहर निकलो पूरा–पूरा दिन पूरी–पूरी रात मंदिर में बिताना है क्या ? जया कहती– हाँ हां आ रही हूँ ....थोड़ी सी बात भी नहीं करने देती हो– बस इतनी ही कुछ आवाज में जय जिज्जी के कुछ शब्द और कुछ वाक्य इस हवेली को सुनाई देते, नहीं तो हवेली में सन्नाटा छा चूका था।

अज्जा मौसी और जय जिज्जी, यह दो ही प्राणी अब हवेली में रहते थे जो हर वक्त एक ही कमरे में दिखाई देते हैं जिस कमरे की लाइट जलती दिखती ये बस वहां होते या फिर मंदिर में दिया जलता, बाकी हवेली अंधेरे में डूबी रहती। ऐसा लगता था जैसे जय जिज्जी के शरीर का काला रंग हवेली ने अपने ऊपर चढ़ा लिया था। एक समय पर हवेली में अलग–अलग रंग की दीवारें थीं, अलग रंग के फर्नीचर,

अलग रंग के लहराते हुए तोरणों और अलग रंग की खूबसूरत लटकती हुई लड़ियों के संग अलग रंग के लहराते पर्दों से जगमगाती थी, सतरंगा सा जगमगाता हुआ रौनक से भरा घर था जिसे हवेली कहते थे लेकिन अब धीरे–धीरे काले रंग में सब कुछ रंगने लगा था। जया कभी–कभी सब भूलकर हल्की मुस्कराहट के साथ अज्जा मौसी से कहती है कि मुझसे दूर बैठा करो, ज्यादा पास रहोगी तो तुम पर भी मेरा काला रंग चढ़ जाएगा, अज्जा मौसी उसे प्यार से गले लगा लेती, पगली ! तुझे बचपन से गले लगा रही हूँ आज तक तो मैं काली ना हुयी यह तेरा काला रंग बाहर दिखता है अंदर से मेरी बिटिया तो दूध सी गोरी है, सोने के दिल वाली मेरी प्यारी जया, एक अच्छे दिल की राजकुमारी जिसे कोई पहचान नहीं पा रहा, बेटा इसमें तेरा कोई कसूर नहीं है, लोगों की किस्मत खराब है वरना तुझ जैसी लड़की को मैंने बचपन से देखा है इतनी प्यारी, नेक दिल की बेटी मैंने कभी नहीं देखी अगर मेरा बेटा होता ना तो तुझे बेटी से अपनी बहू बना लेती है। जय जिज्जी हंसती–अच्छा–अच्छा अज्जा मौसी तुम बहुत मीठा बोलती हो, अच्छा लगता है वादा करो तुम तब तक जीना जब तक मैं ना मर जाऊ, अज्जा मौसी उसे धौल जमा देती–पगली कहीं की मरने की बातें नहीं करते ..दीया बाती का समय हो गया, जा जाकर अपने कृष्णा को संभाल अकेले बैठे हैं ...जाओ जल्दी जाओ वरना बाहर आकर बोलेंगे कि जया ओ जया कहां हो ? और कुछ देर के लिए ये हवेली जी उठती।

अज्जा मौसी और जया की जोड़ी ज्यादा दिन कैसे चल सकती थी, दुगनी उम्र की अज्जा मौसी ने जया को बचपन में खिलाया था वो लगभग जया की मां की उम्र की थी, उन्होंने उसी लाड़ से जया को पाला पोसा था। कभी–कभी अकेले उन्होंने जया को भी रोते देखा था और कई बार जया ने भी अज्जा मौसी को रोते हुए कृष्ण के मंदिर के सामने बैठे हुए पाया था, वह हमेशा कृष्ण को उलाहना देती कि कैसे हो कृष्णा जया कितनी सेवा करती है, बचपन से देख रही हैं उस पर तरस नहीं आता आप भी तो सांवले हो लेकिन तब भी राधा जैसी गोरी को लेकर दुनिया को प्रेम की परिभाषा दी आपने, सारे जहां में राधा कृष्ण कहलाते हो लेकिन दुखिया जया जैसी सांवली लड़की के नाम कोई सांवला लड़का भी नहीं लिखा तुमने ? तुम तो बस मूर्ति के अंदर छिपे रहते हो अगर सच में हो तो बाहर आओ, जया को आशीर्वाद दो कि वो ऐसा जीवन जिए जिसकी ललक हर लड़की को होती है– वो भी एक पत्नी का सुख पाए, वो मां भी बने, खुशियां भी पाए और उसे खुश देखके उसके मां बाप की आत्मा को भी शांति मिले। लेकिन अज्जा मौसी की प्रार्थना पूरी नहीं हुयी और दुःखी अज्जा मौसी एक दिन उठाने पर भी ना उठी, जब जय जिज्जी ने जाकर उनको हिलाया तो पता चला मौसी पूरी तरफ से सो चुकी है अब कभी नहीं उठ पाएंगी।

जय जीजी की जिन्दगी से अज्जा मौसी भी जा चुकी थी अपनी ही हवेली के निचले हिस्से में बनी हुई दुकानों के जो किराएदार थे उनको जय जिज्जी ने बुलाया और अज्जा मौसी का अंतिम संस्कार किया। अब आसपास के मोहल्ले के लोगों को और दूरदराज के रिश्तेदारों को भी अब पता चल गया था की हवेली में रहने वाली जया का अब कोई नहीं है, उस पर उनकी हवेली, उनकी दुकान है वो अब एक सीधी साधी अकेली औरत के पास? सबने हड़पने की अपनी प्लानिंग शुरू कर दी थी। जय जिज्जी भी अन्दर ही अन्दर डरी हुयीं थी कि कैसे सब करेंगे, वैसे भी उनको इन सब कामों में कोई रुचि न थी, जायदाद पाकर कोई खुश होता है पर जय जिज्जी दुःखी थी की इतना सब माँ बाप ने क्यूँ जोड़ लिया अब कौन देखेगा ? पूजा के फूल देके जाने वाली जमुना ने जय जिज्जी को और भी डरा दिया कि जायदाद के लिए कत्ल भी हो जाते हैं सो संभल के रहना। अब जय जिज्जी पूरी तरह से अपने मन्दिर और कान्हा को समर्पित हो गयी थी। जमा पूँजी कुछ थी नहीं, ज़मीन पे कब्जा करने का प्लान किराएदार बना ही रहे थे। तो धीरे–धीरे किराया देना उन लोगों ने बंद कर दिया। जय जिज्जी की परेशानी बढ़ने लगी न लड़ना आता था न चिल्लाना ....करे तो क्या करें ? उन्होंने सब अपने कान्हा पे छोड़ दिया।

जय जिज्जी की दूर की मौसी जो पहले झाँसी में रहतीं थी वो अब इसी शहर में तीन बत्ती से आगे जाकर सागर तालाब के पास बसे पुरविआयु मोहल्ले में रहती थी उनके एक बेटा भी था कनक। वो कभी–कभी जया से मिलने आती रहती थीं जया की माँ के जाने के बाद वो जया के लिए फिकरमंद थी। जय जिज्जी उनको मौसी ही कहती

थी क्योंकि वो माँ की सहेली थीं साथ पढ़ाई की थी उन्होंने, वो विधवा थीं और वो अपने जेठ और उनके परिवार के साथ रहती थी, दो मंजिला मकान था नीचे का पूरा घर कनक की माँ के नाम था और ऊपर उनके जेठ का परिवार रहता था। उनका बेटा कनक वैसा था जैसे बिना पिता के साए के जो बच्चे बड़े होते हैं वैसा–धीट और बिखरे हुए दिमाग का, उम्र 22 साल लेकिन अब भी घर के बड़ों की गालियाँ खाता क्यूँ कि किसी भी चीज में उसका कोई दिमाग नहीं लगता था। कभी कुछ करना है तो कभी कुछ करना है। कनक की माँ अकेले जी रहीं थी। इस बार जब वो जय जिज्जी से मिलने आई तो बोली बेटा अकेले रहना ठीक नहीं है तरह–तरह के लोग हैं और अब तो तुम्हारे बारे में सबको पता है कि तुम अकेली हो कभी कुछ हो गया तो अकेले कुछ ना कर पाओगे इससे अच्छा है हवेली बेच दो, जो कुछ पैसा मिले उसको बैंक में रख दो अपने नाम से और अपना सामान जो भी रखना या साथ लाना चाहती हो तो लेके हमारे साथ रहने लगों। तुम्हारी माँ के बहुत अहसान हैं हमारे ऊपर हम कभी गलत नहीं करेंगे तुम्हारे साथ न हमें कुछ चाहिए तुम्हारा। जय जिज्जी रो पड़ी और मौसी के गले लग गयी, वो तो वैसे भी सबकी बातें मान लेती थी सो उन्होंने मुंह बोली मौसी की बात भी मान ली। हवेली माटी मोल बिक गई, दुकानों के जो किराएदार थे उन्होंने ने भी बहती गंगा में तुरंत डुबकी लगायी और औने–पौने दामों में दुकानें अपने नाम करा लीं और धीरे–धीरे जय जिज्जी की कीमती चीजें बिक गयीं। मंदिर की चौखट और अन्दर का छोटा मंदिर जिसमें कन्हैया बिराजते थे वो अपने साथ ले लीं जय जिज्जी ने कुछ जरूरी चीजें और कुछ फर्नीचर जो उनकी स्कूल टाइम से उसके साथ जुड़ा था वह ले लिया, हाँ जया जिज्जी के पास एक छोटी सी डिब्बी थी जिसे माँ ने मरने के कुछ दिन पहले संभल के रखने को कहा था जिसमें कीमती नग थे नीलम, माणिक, पुखराज, कुछ हीरे और बाकी मूँगा मोती कई सारे, सो कहने को ये एक छोटी सी डिबिया थी लेकिन सही मायने में बेहद कीमती थी अगर सही कीमत कोई इन पत्थरों की आंकता तो लाखों की कीमत हो जाती की थी ये छोटी सी डिबिया की।

जय जिज्जी मौसी के साथ उनके घर शिफ्ट हो गयीं– मौसी के जेठ को कोई ऐतराज न था नीचे का घर बड़ा था और वो लोग भी जय जिज्जी को जानते थे। कनक आज का लड़का था उसको पता था की जय जिज्जी कैसी हैं– एकदम सीधी–सादी। जय जिज्जी का फर्नीचर उसने अपने कमरे में लगवा लिया जय जिज्जी ने खुशी–खुशी दे दिया कनक मुंह बोला छोटा भाई जो था उनका। कनक खाली समय में जय जिज्जी से बात करता और भोली जय जिज्जी खुश हो जातीं जैसे उनको मन की मुराद मिल गयी थी बचपन से अकेली रही थीं न भाई न बहन कनक के साथ वो बड़ी बहन जैसा बर्ताब करती। उनके पास पैसे तो थे ही उन्होंने हक के साथ मौसी के मना करने पर भी छोटा का व्यापार करने के लिए अपनी जमा पूंजी में से कुछ रुपया कनक को दे दिया। आखिर वो बड़ी बहन जो थीं उसकी। कनक जय जिज्जी को खाने पीने की चीजें लाकर देता रहता उसे पता था जय जिज्जी को चटर पटर खाने का शौक है। मौसी को भी ठीक लगता की चलो बेटे को बुरा नहीं लगा कि उन्होंने जया को अपने घर बसा लिया।

कुछ दिनों बाद कनक को जय जिज्जी की ही जबान से पता चला कि उनके पास एक छोटी सी कीमती डिब्बी है और भावुक होकर जय जिज्जी ने एक दिन उसे दिखा भी दी थी कि तू तो छोटा भाई है वैसे तो अम्मा ने कहा था यह डिब्बी किसी को मत दिखाना लेकिन तू तो भाई है मैं तुझे दिखाती हूँ तब से कनक ने अपना आत्मीय संबंध जय जिज्जी से इतना गाढ़ा कर लिया कि वह उनके लिए कभी जलेबी, कभी रबड़ी, कभी लड्डू यह कह कर लाया करता आप इसे भोग में लगा दीजिए आखिर कन्हैया जी को भी अच्छा प्रसाद मिले। जय जिज्जी का कन्हैया जी से खास भक्त वाला सम्बन्ध था ही तो भाव विभोर हो जाती कि छोटा भाई उसके कान्हा के लिए प्रसाद लाया है। अक्सर इस घर में भी जय जिज्जी को अपने कन्हैया से बात करते हुए सभी लोग देख चुके थे क्यूँ कि मंदिर आँगन में लगाया था और मेन दरवाजा आँगन से होकर जाता था तो पहले माले में रहने वाले लोग भी यहीं से होकर निकलते थे और अब सब को विश्वास हो गया था कि जय जिज्जी का दिमाग कमजोर हो चुका है और यह पागलपन की निशानी है वह अक्सर पागलों के जैसे मंदिर में बैठकर अपने कन्हैया से ऐसे बात

करती हैं कि जैसे उनके बचपन के दोस्त से बात करते हैं वो अपना सुख दुःख उनसे बांटती।

इधर जब से कनक ने वो छोटी सी डब्बी को देखा था उसका लालच बहुत बढ़ गया था मां ने उसे कई बार समझाया कि ज्यादा दिमाग मत खराब कर इतना लालच अच्छा नहीं होता बेचारी सीधी सादी है अकेली है पता नहीं कब मर जाए उसे चैन से जीने दे सुबह दो रोटी खाती है शाम का खाना तक नहीं खाती अब उनसे कुछ मत मांगना वो बोझ नहीं है उसके मां–बाप के हम पर बहुत एहसान हैं तुम्हारे पिता को कितना पैसा भी दिया था उन्होंने जो उन्होंने कभी नहीं मांगा बल्कि मरते–मरते सब माफ कर दिया था ... जया मेरी बेटी के जैसी है तो तू कोई ऐसा गलत काम नहीं करना। कनक ने अपनी मां का हाथ पकड़ा और कहा कि नहीं वह मेरे लिए भी जय जिज्जी है.. बहन हैं ..मैं तो यूं ही उनसे हंसता बोलता रहता हूं ..मैं भी समझता हूं कि वह बेचारी अकेली हैं और अब हम ही लोगों को उनका ध्यान रखना है।

कनक का दिमाग शैतान बन चुका था एक दिन उसने जय जिज्जी से कहा कि वो वह हरिद्वार जा रहा है और वहां से मथुरा आप कभी मथुरा नहीं गई हूं आपको पता है न वहां पर कृष्ण का कितना बड़ा मंदिर है वहां पर एक जगह रासलीला होती है जय जिज्जी ने कभी अपने घर से निकल कर कोई दूसरे शहर जाने का भी नहीं सोचा था मथुरा का नाम सुनके उन्हें बहुत खुशी हुई क्योंकि मथुरा वृंदावन आसपास ही हैं और वो बचपन से कृष्ण भक्ति थी उनका मन ललचाया कि मरने से पहले क्या मैं वहां जाकर तीर्थ कर सकती हूं ? कनक ने कहा क्यों नहीं आप मेरे साथ चल सकती हैं लेकिन अभी यह बात मां को मत बताइएगा क्योंकि वह आपको कहीं जाने नहीं देंगी मैं अपने हिसाब से माँ को मना लूँगा जय जिज्जी जी ने हां में हां मिला दी। एक दिन कनक शाम की ट्रेन के दो टिकट ले आया एक उनके लिए और एक अपने लिए, दोनों ट्रेन में बैठ गए कनक ने उनसे कहा कि वह अपना थोड़ा सा सामान रखें हाँ वो डब्बी जरूर रखें क्योंकि इतनी कीमती चीज छोड़कर घर पर मत जाइएगा कुछ हो गया तो ? माँ भी अकेली हैं ..आप अपने पास ही रखा करें। कनक छोटा भाई था जिसने हमेशा अब तक ख़याल रखा था इसलिए जय जिज्जी ने कनक की बात मान ली और वह डिब्बी अपने साथ रख ली। मौसी से जया ने कहा कि वो अपनी हवेली जा रही है असल में मदिर के प्रांगण वाला हिस्सा जय जिज्जी ने नहीं बेचा था आखिर मंदिर है वहां सो एक हिस्सा अब भी था जहाँ वो गाहे वगाहे जाके दिया लगाकर आती थी। कनक ने यही कहने को कहा था माँ को। वैसे कनक खुद दो घंटे पहले अपनी माँ से ये बोल के निकल गया था कि व्यापार के चक्कर में किसी से नरयावली में मिलना है शाम तक आ जाउंगा। मौसी ने जया को समझाया था कि किसी पेपर में हस्ताक्षर न करे न किसी पे यकीन करे– जया ने हँसते हुए कहा था हां–हां अब सिवाए तुम्हारे और अपने छोटे भाई कनक के और किसी पर कभी यकीन नहीं करूंगी। आती हूँ वो जाते–जाते मौसी के गले मिली कि बड़े अच्छे काम के लिए जा रही हूँ आशीर्वाद दे दो– मौसी ने उनको गले लगा लिया था– पगली एक कृष्णा यहाँ हैं अब वहां दिया जलाने जा रही है। जल्दी आ जाना। कनक लेने आएगा। जय जिज्जी ने ठीक है कहा और निकल गयीं। उनको बस यही एक रास्ता पता था जहाँ वो अकेले आती जाती थी कभी–कभी अज्जा मौसी के साथ–साथ।

यहाँ ट्रेन में जय जिज्जी बैठती हैं उनका सामान सारा कनक पकड़े है– कोई कुछ चुरा न ले इसलिए जय जिज्जी ने सामान के साथ डिब्बी भी उसी को पकड़ने को दे दी थी उनको पता था और अम्मा भी कहती थी की वो बचपन से लापरवाह हैं और अब तो वो भूलने भी लगी थी। कनक खाने की कई सारी चीजे लाकर उनको पकड़ाता है की रास्ते भर खाते पीते चलेंगे हम लोग। जया खुश थी कि हरिद्वार जा के वहां से मथुरा वृन्दावन जाना है– भला हो मेरे भाई का नहीं तो कब जाते। शाम का समय ट्रेन चल चुकी थी कनक ने उनको समझाया कि ट्रेन के सब डब्बे जुड़े हुए हैं अगर किसी स्टेशन पे इस डिब्बे में नहीं चढ़ पाया तो किसी और में चढ़ के बाद में आपको मिल जाऊंगा हरिद्वार में ही हमें उतरना है उससे पहले कहीं नहीं तो घबराना नहीं। जय जिज्जी के जीवन की पहली यात्रा थी। पिता ने स्कूल

तक डांट के जबरदस्ती नहीं भेजा तो दूसरे शहर अकेले कैसे भेजते इसलिए ये अकेले जाने का उनका पहला रोमांच था। पैंतालीस साल की जय जिज्जी बच्चों के जैसे खुश थी।

ट्रेन चलते–चलते सूरज को पीछे छोड़ आई थी रात हो चली थी कनक और जय जिज्जी ने खाना खाया कनक ने उनका बिस्तर बिछा दिया खुद ऊपर वाली बर्थ पे जाके लेट गया। हिलती डुलती गाड़ी में न जाने कब जय जिज्जी सो गयीं।

यहाँ घर के दरवाजे पे खट–खट हुयी सांकल बजी तो मौसी ने दरवाजा खोला– सामने कनक खड़ा था मौसी चिल्लाई दो घंटे का बोल के गया था रात के नौ बज रहे हैं कहाँ थे ? और जया कहाँ है लेके नहीं आया उनको ...मौसी चीखती हैं जाओ पहले हवेली देख के आओ जया तुम्हारे जाने के बाद हवेली गयी थी अब तक नहीं आयीं तुम्हारे इंतजार में बैठी होगी वहीं मंदिर में। कनक बोला– उनको भेजा ही क्यूँ वैसे भी दिमाग से कमजोर हो गयी हैं घर याद रहता नहीं हवेली क्या खाक जाएंगी अकेले ..आप भी अम्मा गज़ब करती हो। कनक तुरंत उनको लाने चला गया।

दूसरे दिन खूब ढूँढा सबने जय जिज्जी को। न किसी ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई। उनका अपना कोई था नहीं और मौसी के घर वालों ने उनको रोक दिया कि तुमपे ही सवाल उठेंगे कि किसी को लेके क्यूँ घर में रख लिया– कब आयीं कब गयी– भलाई करने गयीं थी जेल चली जाओगी। कनक ने भी हाँ में हाँ भरी ...कई दिनों घुमाता रहा जय जिज्जी का पता लगाने ...वो न मालूम कहाँ गायब हो गयीं थीं। बहुत उदास हो गया था कनक, माँ की गोद में सर रखके रोया भी था। माँ हमेशा से माँ ही होती है कनक का इतना अपनापन जया के लिए वो भी रो पड़ी उन्हें भनक भी न पड़ी कि कनक ही है जो जया को ले गया था। छोटा शहर धीरे–धीरे सब को पता चल गया की जया तो वैसे ही पागल हो गयी थी। माँ की सहेली के यहाँ शिफ्ट हुयी थी, कनक ने पुलिस को जय जिज्जी का सारा सामान दिखा दिया जो जग जाहिर था सबने देखा ही था ..नहीं देखी थी किसी ने वो छोटी की कीमती डिब्बी– और किसी ने न देखा था जया के काले शरीर में उनका सुनहरा और कीमती दिल। लोगों ने कहा जाने कहाँ गुम्म हो गयीं हैं। जय जिज्जी के लिए रोने की बात तो दूर जिसका कोई सगा न हो वहां कौन किसके लिए ज्यादा दिन अफ्सोस भी जताता है।

जय जिज्जी को गए आज दस साल हो गए थे आज तक जय जिज्जी को किसी ने नहीं देखा था।

हाँ वहां ट्रेन रुकी थी– जय जिज्जी न जाने कितनी देर खिड़की से बाहर कनक भैया कनक भैया कहती चिल्लाती रहीं थी ...एक–एक करके सभी यात्री उतर चुके थे। कचरा बटोरने वाले ने उनको भी उतार दिया। उसे पता था हरिद्वार में कई भूले बिसरे यात्री ऐसे ही आते हैं जिनको लोग साथ तो लाते हैं लेकिन साथ वापिस नहीं ले जाते। स्टेशन पे बैठे एक साधु के गुट ने जिसमें कुछ साध्वी औरतें भी थी जय जिज्जी को साथ आने को कहा –अचानक ऐसा लगा जैसे जय जिज्जी एकदम शांत हो गयीं हैं न पीछे मुड़के देखा न फिर कनक को आवाज दी, उनके कपड़ों के सामान की थैली जमीन पर पड़ी थी, खाने का सामान भी पड़ा था उन्होंने मुड़ के न देखा न उसे उठाया वो बेसुध सी उन साधुओं की भीड़ के पीछे चल पड़ी थी– सालों मंदिर में ताली बजा बजा के दो कटोरी भात में जीती रहीं और अविवाहित कुँवारी जया अब विधवाओं में शामिल कृष्ण के नाम हो चुकी थी। जय जिज्जी अब जिंदा हैं या मर गयी पता नहीं या किसी नदी की भेंट चढ़ गयी। जय जिज्जी जैसी भी थी यादों में जी रही थी। कभी किसी ने उनकी खबर नहीं ली थी, किसी ने उनके गुमशुदा हो जाने की खबर थाने में दर्ज न कराई थी ...उनसे छूटे हुए सामान पर रिश्तेदार होने का सबूत दे–दे के कई लोग ले गए थे और तय कर लिया कि जिसकी किस्मत में जो लिखा होता है वही होता है। लेकिन सही मायेने में जय जिज्जी गायब कहाँ हुई थी वो तो जिंदा थी यादों की कोठरी के किसी हिस्से में जी रहीं थी अब भी, इतने सालों बाद अपने नाम के साथ वो मेरे दिल में जिंदा हैं। मौसी ने अपने पास रखी जया की फोटो को चूमा और किनारे रख दिया। 18 साल की जय जिज्जी फोटो में खिलखिला के हंस रही थी गहरे सांवले रंग के चहरे पे मोती से चमकते दांत फोटो में भी चमक रहे थे ...मौसी ने वापिस पलट के फोटो को देखा जैसे जया ने कुछ कहा हो। ◆

पता : क–1/5, 603 यमुना नगर, अँधेरी वेस्ट, मुंबई

मो. : 9821893069

ओह ! यह कैसी ज़िन्दगी

❑ रीतादास राम

हताश, निराश बंद होती आँखों से विकास पाटील ने अपनी तीन असहाय बच्चियों को देखा जो माँ के इर्द गिर्द खड़ी थी। संगीता, ममता और कविता उसकी बेटियाँ। बिना माँ की बच्चियाँ। वंदना उसकी पत्नी चार महीना पहले चौथे बच्चे के जन्म के समय ही उसे छोड़ गई। अपनी छाती को कसकर पकड़े विकास हार्ट अटैक के दर्द से बेहाल बिलबिला रहा है। साँस भारी हो रही है। पिता, भाई, अड़ोस–पड़ोस के लोग उसे जल्द से जल्द अस्पताल ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। वह ऐसे गाँव से है जहाँ सीटी बस आते वक्त सुबह आठ बजे और लौटते वक्त रात को दस बजे रुकती है। गाँव से बाहर जाने वालों का यही बस सहारा है। इसके अलावा कोई बस आते–जाते कभी दिखाई नहीं देती। वह पथराई आँखों से खुद का ले जाना देख रहा है। कुछ ही महीने पहले तीन बेटियों और पत्नी का उसका छोटा सा परिवार था। संयुक्त परिवार इस तरह कि अगल–बगल पड़ोस में माता–पिता और भाई अपने परिवार के साथ, रहते थे। अपने नाम के विपरीत विकास पढ़ा लिखा ना था। खेती किसानी का काम करता था। उसका परिवार पीढ़ियों से इसी काम में जुटा रहा। वह भी इसलिए इसी तरह सभी अपने परिवार का भरण–पोषण करता हैं। विकास ने इसी समाज में आँखें खोली। वह भी खेती–किसानी मन लगाकर करने लगा। पत्नी वंदना भी अनपढ़ ही थी। सास–ससुर की सेवा करना, पति की इच्छाओं का ख़याल रखना और बच्चियों की देखभाल करना ही उसके कुल जमा उसके काम थे जिसे वह मन लगाकर पूरा करती रहती थी। मन में बस एक ही, बेटे की चाहत सँजोए बैठी थी।

कोई कहता मन्नत मान तो जरूर बेटा होगा। कोई मंदिर में माथा टेकने की सलाह देता। कोई बाबा तो कोई पीर–फकीर के पास जाकर दुआ माँगने की बात करता। किसी ने भरोसा दिलाया अब की बार बेटा ही होगा, तो वंदना आस लगाए बच्चे का इंतज़ार करने लगी। आठ महीने पूरे हो चुके थे। शरीर को संभाले वह घर के काम करती और समय मिलने पर पड़ी–पड़ी मनगढ़ंत सोचा करती। ख़याल यहीं पर आकर अटक जाते कि बेटा होगा या बेटी। बेटी तो तीन–तीन है सो वंदना बेटे की आस की ललक कुलांचे मार रही थी। यूँ तो आस पड़ोस में, परिवार में और उसे भी कई बच्चे थे। लेकिन वंदना हर बार सोचती इस बार बेटा हो जाए तो अगला नहीं करूंगी। अब बेटी नहीं चाहिए। पहले ही तीन–तीन बेटियाँ है। अब की बेटा हो तो पार पाऊँ।

वंदना के भरोसे को जैसे तिनके का सहारा मिला। चार घर छोड़ भविष्य बाँचने वाले तोते वाले की आवाज आई। सालों से वह इस ओर नहीं आया था। वह हर बार उसी से भविष्य पढ़वाती है। वह तरह–तरह की बातें बताता। वह और उसकी सहेलियाँ खुश हो जाती। सभी मजाक मस्ती में अक्सर तोते वाले को अपने पास बुलाते और उससे तरह तरह की बातें पूछते। कभी–कभार सच साबित होते बातों ने उस पर अनजाना सा भरोसा कायम किया जबकि बहुत–सी गलत साबित होती बातों पर कोई ध्यान नहीं देता था। वंदना भी सोचती, जाने कब तोता बेटे होने की बात सही होने की पर्ची निकाल दे और उसका भविष्य सँवर जाए। वह महीनों से इसी बात को सीने से लगाए अपने नौ महीने पूरे होने की प्रतीक्षा में लगी थी। आज अचानक तोते वाले से एक सुखद आशा जागने की उम्मीद ने उसके मन को ललचा दिया। हाथ का काम जल्दी–जल्दी निपटा कर वह पड़ोस की बहु जो उसकी सहेली भी थी, शांति को आवाज देती इंतजार करने लगी। कुछ ही देर में शांति काम निपटा अपने घर से बाहर आई।

कोई कहता मन्नत मान तो जरूर बेटा होगा। कोई मंदिर में माथा टेकने की सलाह देता। कोई बाबा तो कोई पीर–फकीर के पास जाकर दुआ माँगने की बात करता। किसी ने भरोसा दिलाया अब की बार बेटा ही होगा, तो वंदना आस लगाए बच्चे का इंतजार करने लगी। आठ महीने पूरे हो चुके थे। शरीर को संभाले वह घर के काम करती और समय मिलने पर पड़ी–पड़ी मनगढ़ंत सोचा करती। ख्याल यहीं पर आकर अटक जाते कि बेटा होगा या बेटी। बेटी तो तीन–तीन है सो वंदना बेटे की आस की ललक कुलांचे मार रही थी। यूँ तो आस पड़ोस में, परिवार में और उसे भी कई बच्चे थे। लेकिन वंदना हर बार सोचती इस बार बेटा हो जाए तो अगला नहीं करूंगी। अब बेटी नहीं चाहिए। पहले ही तीन–तीन बेटियाँ है।

दोनों, तोते वाले के पास जाने के लिए चल दी। चौथे घर के आँगन में तोते वाला पिंजरे से तोते को निकलवा पर्ची उठाने कह रहा था। दस बारह औरतें कुछ बूढ़ी–बुजुर्ग उसे घेरे हँसी–ठठा में लगी हुईं थी। कुछ औरतें पिछली बार बताई बातें सच होने का जिक्र करती तोते की तारीफ कर रही थी। कोई तिल का ताड़ तो कोई मजाक बना रही थी। तोते वाला खामोश अपने पैसे की परवाह करता नए लोगों को पर्ची निकालने के लिए दस रुपये देने को प्रोत्साहित कर रहा था। भविष्य जानना सभी के लिए एक सुखद जिज्ञासा का विषय था। लोग उत्साह से दस रुपये जैसी छोटी निधि की परवाह ना करते पर्ची निकलवाने के लिए जोर देते तो कुछ लोग 'यह कोई सौ प्रतिशत सच थोड़े ही हो सकता है' का ताना देते निष्क्रिय बने लेकिन आसपास ही जमे हुए थे। बाकी लोग लोगों के सवालों और निकलते उत्तर का मजा ले रहे थे।

वंदना बहुत देर तक देखती रही। उसकी जिज्ञासा ने उसकी कौतूहलता को जिलाए रखा। भीतर ही भीतर वह मन बनाती रही कि उसे भी पर्ची निकलवानी चाहिए, देखे तो तोता क्या कहता है। एक झिझक ने उसके धीरज को कस कर पकड़े रखा था कि इतने लोगों के सामने कैसे पुछवाएं। वह बहुत देर तक लोगों को अपनी–अपनी पर्ची निकलवाते देखती रही। कुछ देर बाद लोग छटने लगे। लगभग सभी के निकल जाने के बाद उसकी इच्छा बलवती हुईं। उसने अपने नाम की पर्ची निकालने के लिए तोते वाले को कहा। तोते वाले ने पिंजरे से तोते को निकालकर पर्चियों के सामने रख दिया। तोता कभी यहाँ कभी वहाँ देखता, पर्ची पर चोंच रखता एक पर्ची उठा लिया। तोते वाले ने पर्ची बाँची, "जो तुम सोच रही हो उसका उल्टा होगा। तुम्हें इस बार भी लड़की ही होगी"। वंदना का उत्साहित दिल बैठने लगा। उसे लड़की तो कतई नहीं चाहिए। लड़का न होता न सही, लड़की नहीं चाहिए। तीन–तीन लड़कियाँ पहले से ही है।

वंदना भारी मन से चुपचाप घर लौटने लगी। रास्ते भर शांति उसे समझाती रही। होनी को कौन टाल सकता है। किस्मत में लड़की होगी तो हो जाने दे। वैसे भी तेरे हाथ में है ही क्या? अब तू भी क्या कर सकती है। आठवाँ महीना पूरा हो ही चुका है। अब तो सिर्फ इंतजार ही किया जा सकता है। क्या जाने तेरी ये बेटी तुम्हारी किस्मत बदल दें। शांति समझती–समझाती अपने घर चली गई। वंदना दिन भर काम करती और विचारों में खोई सी, उदासी से भरी रही। एक दिन बीता। उसने मन ही मन फैसला कर लिया कि उसे इस बार भी लड़की तो चाहिए ही नहीं। खुद में खुद

से तय करती बिना डॉक्टर की सलाह के उसने बच्चा गिराने की गोलियाँ खा ली। उसे लगा थोड़ी तकलीफ जरूर होगी लेकिन बच्चा गिर जाएगा। लेकिन वह पूरे महीने से थी। जानकारी की कमी, अनपढ़–गँवार, सूनी–सुनाई अधूरी बातों की मालूमात के अपने फैसले ने उसे संकट में डाल दिया।

कुछ ही देर में वंदना के पेट में दर्द की लहरें उठने लगी। सास को लगा बच्चा होने का समय हो गया है। वह बहु को तसल्ली देती, जल्दी–जल्दी काम निपटाने लगी। धीरे–धीरे वंदना की तकलीफ बढ़ने लगी। पेट में बच्चे की हलचल और दर्द से घबरा कर उसने असली बात घर वालों को बता दी, कि उसने बच्चा गिराने की दवाई खा ली है। क्योंकि उसके पेट में तोते वाले ज्योतिषी ने बताया है कि इस बार भी लड़की ही होगी। जल्दी में घर वालों ने उसे बैलगाड़ी में डाला और अस्पताल ले जाने लगे। रास्ते ऊबड़–खाबड़ थे। उसे असहनीय झटके लगते रहे। दर्द बढ़ता ही गया। धीरे–धीरे साँस भी अटकने लगी। अस्पताल आधे घंटे की दूरी पर था। जो औरतें साथ थी उन्हें जानकारी मिली कि बच्चा पैर की ओर से बाहर आ चुका है। बैलगाड़ी को वापस गाँव की ओर मोड़ा गया और दाई को बुलाया गया। दाई के आते और जल्दी–जल्दी सब इंतजाम करते हुए भी वंदना की साँस उखड़ने लगी। वह बेहोश हो गई। बच्चा पहले ही आधा बाहर आ चुका था। उसका शरीर नीला पड़ गया था। दाई ने बच्चे का सिर निकाला। बच्चा जिंदा था पर मरणासन्न। वंदना को लड़का हुआ था। यह खबर वंदना तक मिलने के पहले ही वह स्वर्ग सिधार चुकी थी। कुछ औरतों ने उसके हाथ पैर में मालिश की लेकिन वह पहले ही जा चुकी थी। कुछ देर बाद बच्चे की काया भी शिथिल पड़ गई। उसकी भी मौत हो गई। विकास की देखते–देखते जैसे दुनिया ही लूट गई। तीन बेटियाँ मुँह बाएं खड़ी थी और पत्नी की जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी। उसे काटो तो खून नहीं। वह बेटे का बाप भी बना, अब वह भी नहीं रहा। तीनों बेटियों को छाती से चिपटाए रोता–धोता वह होश खोता रहा। माँ, पिता और भाई का ही अब उसे सहारा था। वह भी अचानक हुए इस हादसे से भौंचक स्थिति को समझने की कोशिश कर रहे थे।

विकास स्थिति से बेदम हुआ, हाल बेहाल, उसे खुद की भी सुध ना रही। सबसे छोटी बिटियाँ दो साल की थी। उससे बड़ी चार और सबसे बड़ी सात साल की थी। माँ और छोटे भाई की पत्नी, बच्चियों को संभालने में लगी थी। बच्चियाँ माँ–माँ किए जा रही थी। कुछ दिन तो पत्नी की क्रिया कर्म में बीते। फिर विकास को एहसास हुआ कि अकेले बच्चियों को संभालना बहुत मुश्किल है बल्कि उसके बस की बात नहीं। बच्चियाँ बहुत छोटी है। सभी की सलाह पर वह दूसरी शादी के बारे में सोचने लगा। उसने एक गरीब घर की महिला जो अविवाहित थी, से शादी करने की सोची। विकास को लगा एक गरीब को घर भी मिलेगा और उसके बच्चों को सहारा भी मिल जाएगा। उसने घर वालों से बात की। सभी ने उसकी बातों की सराहना की। पत्नी को मरे तीन महीने भी पूरे नहीं हुए थे कि उसने एक गरीब घर की लड़की सुनीता से शादी कर ली।

शादी हो गई। घर ठीक–ठाक चलने लगा। सुनीता गृहस्थी संभालने में जुट गई। बेटियों को भी अच्छे से देखती। धीरे–धीरे विकास अपने खेती–किसानी के काम पर जाने लगा। नई माँ के भरोसे बच्चों को छोड़ने में उसे तकलीफ तो होती थी पर घर में बच्चियों को दादी के साथ ने उसे निश्चिंत किया। बच्चियाँ नई माँ के साथ के बावजूद दादी के पास अपनापन पाती। बच्चियाँ हमेशा दादी–दादी किया करती। सुनीता खाना बनाना, झाड–पोंछ, आँगन की देखभाल, करती और पड़ोस में रह रहे सास ससुर को भी देखा करती। देवर और देवरानी पड़ोस में ही दूसरी ओर रहते थे। उनसे भी वह अच्छे संबंध रखती। महीना पूरा होते न होते सुनीता ने सब का विश्वास पा लिया। सास भी उस पर घर छोड़कर बच्चियों को ले अड़ोस–पड़ोस चली जाया करती। दिन भर सुनीता अपने घर की साफ–सफाई, घर को नए सिरे से जमाने और अन्य कामों में जुटी रहती। विकास भी निश्चिंत सा अपने काम में निकल जाता।

आज विकास काम से वापस आया तो देखता है, माँ जोर–जोर से रो रही है। पिता हैरान परेशान है। उसने घर के भीतर आकर देखा तो पता चला सुनीता रुपया–पैसा, कीमती बर्तन–भाँड़े, कपड़े, राशन, जितना वह ले जा सकती थी चोरी करके घर खुला छोड़ कर वह भाग गई। दूर–दूर तक उसका कोई अता–पता नहीं है। उसके घर वाले भी जो

गाँव में रहते थे, अपने घर से नदारत है। पता चला कुछ ही समय पहले वो सभी कहीं से आकर यहाँ बसे थे। वह एक चोर परिवार था जिसका अब कोई पता–ठिकाना नहीं है। विकास ने कुछ रुपये जोड़ कर रखे थे और पहली पत्नी के सोने चाँदी के जेवर भी थे जो वो लूट ले गई। विकास खुद को संभाल नहीं पाया और छाती पकड़कर दर्द से बेहाल वहीं सहारा खोजने लगा। सभी ने उसे सहारा देकर बिठाया। पानी पिलाया। उसका दर्द कम ना हुआ बल्कि बढ़ता ही गया। सभी लोगों ने उसे अस्पताल ले जाना ही उचित समझा।

जाते–जाते माँ को आँख भर देख बच्चियों को संभालने का इशारा भर कर पाया था विकास। अंधविश्वासी और अनपढ़ पत्नी के बेटे के चक्कर में गर्भ गिराने का प्रयास उसे कितना भारी पड़ेगा, उसने कभी ख्वाब में भी सोचा न था। विकास और वंदना का छोटा सा परिवार देखते–देखते उजड़ गया। तीन बच्चियों के भविष्य के बारे में सोचते ही ... विकास का छाती का दर्द और बढ़ने लगा। अस्पताल ले जाते–जाते रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। किसी को पता भी नहीं चला। सभी यह सोच रहे थे कि विकास दर्द से बेहोश हो गया है। डॉक्टर ने जाँच कर विकास के मौत की खबर दी। रास्ते में अपने छोटे से परिवार की याद और चिंता करते कब उसकी जान निकल गई शायद उसे भी पता ना चला होगा।

जाते–जाते माँ को आँख भर देख बच्चियों को संभालने का इशारा भर कर पाया था विकास। अंधविश्वासी और अनपढ़ पत्नी के बेटे के चक्कर में गर्भ गिराने का प्रयास उसे कितना भारी पड़ेगा, उसने कभी ख्वाब में भी सोचा न था। विकास और वंदना का छोटा सा परिवार देखते–देखते उजड़ गया। तीन बच्चियों के भविष्य के बारे में सोचते ही ... विकास का छाती का दर्द और बढ़ने लगा। अस्पताल ले जाते–जाते रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। किसी को पता भी नहीं चला। सभी यह सोच रहे थे कि विकास दर्द से बेहोश हो गया है। डॉक्टर ने जाँच कर विकास के मौत की खबर दी। रास्ते में अपने छोटे से परिवार की याद और चिंता करते कब उसकी जान निकल गई शायद उसे भी पता ना चला होगा।

तीनों बच्चियाँ कभी दादी कभी चाची के रहमो–करम पर पलती रही। समय ने उनके साथ जो खिलवाड़ किया था बिचारियों का उसमें कोई कसूर ना था। फिर भी समय की मार खा, वें तीनों लोगों की दया पर जीने लगी क्योंकि माँ और पिता दुनिया में दोबारा नहीं मिलते। उस पर गरीबी अभिशाप की तरह उनसे चिपकी रही। सभी ने उन्हें बोझ की तरह लिया।

माता–पिता की छोड़ी जमीन बेचकर चाची ने दो बच्चियों ममता और कविता की औने–पौने में छोटी उम्र में ही शादी करा दी। दुत्कार, फटकार, अपमान अतृप्ति, उपेक्षा, डाँटना, पीटना, संगीता ने सभी कुछ अपनी आँखों से देखा, झेला, भोगा। जब तक चाची के घर रही, नौकरानी से बदतर जिंदगी जीती रही। चाची खाना तो संगीता से बनवाती, पर रुला–रुलाकर खाने को देती। कभी–कभी संगीता को एक रोटी ज्यादा खाने की इच्छा होती ताकि पेट भर सके पर तड़प कर रह जाती। हर छोटी बात पर उसे चाची से धमकी मिलती कि घर से निकाल दूँगी। दादी के पास उसके लिए हमेशा छुपाई हुई आचार के साथ एक रोटी रहती, जिसे वह चौन से खाया करती।

बिन माँ–बाप के बच्चों से कोई झूठा प्यार भी जता नहीं पाता। आखिर किसी और का बोझ कोई कब तक लादे। चाची ने ग्यारह–बारह की होते–होते संगीता की शादी उसे विदा कर दिया। पग फेरे के लिए संगीता ने आने की न इच्छा जताई, ना ही चाची ने बुलाया। आगे कुआं और पीछे खाई जैसी अवस्था में जिंदगी जीती संगीता, ससुराल में रह रही है।

संगीता फुलसूँगी गाँव से पिम्पलवाड़ी नामक दूसरे गाँव पहुँच चुकी है। धीरे–धीरे गाँव के रीति–रिवाज झेलते–झेलते अब वह अच्छे से समझने लगी है कि औरत क्यों बर्दाश्त नहीं कर पाती अपनी कोख से 'सिर्फ' लड़कियों का पैदा होना। शून्य को ताकती संगीता अक्सर सोचा करती है, "बेटे की चाहत में माँ ने भाई और अपनी जान तो ले ली। ...हमारे लिए आखिर ये कुत्ते जैसी जिंदगी क्यों छोड़ गई!" ◆

पता : चेंबूर, मुंबई–74

मो. : 9619209272

सुखमनी

❑ डॉ. अलका अस्थाना 'अमृतमयी'

सुखमनी क्या बात है। आज तुम फिर आयी हो । देखो आज तुम्हें हम कुछ भी राशन नहीं दे पायेंगे । पहले का बकाया पैसा तो चुकता नहीं किया, फिर आज आकर खड़ी हो गयी।

दुकानदार ने तेज स्वर में कहा— सुखमनी—लेकिन दादा। आज राशन दे दो । घर में कुछ खाने को नहीं है। एक दो दिन में चुकता कर दूंगी। पगार अभी नहीं मिली है। मैं आज काम पर जाउंगी तो फिर इन्तजाम करूंगी। बड़ी मेहरबानी होगी। दुकानदार ने मुंह सिकोड़ते हुए अनखने अंदाज़ में उसे राशन तो दे दिया और कहा ले, ले जा ऽऽऽ। सुखमनी, अपना राशन लेकर घर की ओर बढ़ती जा रही थी, सोचे जा रही थी कि कैसे इस दुकानदार का पैसा चुकता करे।

सुखमनी घर पहुंचती है, दरवाजा खटखटाती है। मां को पुकारती है मांऽ मांऽ दरवाज़ा खोलो मैं आ गयी। मां ने दरवाज़ा खोला, उसे अंदर किया। चूल्हे पर खाना चढ़ाया। खाना पकने के बाद दोनों ने मिलकर खाना खाया। परन्तु, सुखमनी तो खाना खा रही थी लेकिन उसके हृदय में चिन्ता की लहरें उठ रही थीं। कितना कर्ज़ है जो उसे चुकाना है, दूध के पैसे दुकानदार का राशन, बिजली घबराहट बढ़ती जा रही है। खाना तो पेट में चला गया लेकिन स्वाद का अता—पता नहीं।

खाना—खाने के उपरान्त मां अपने घरेलू कामों में लग जाती है वो काम पर चली जाती है। वो पास ही के पारस अपार्टमेण्ट में 3—4 घरों में खाना बनाकर अपनी जीविका का निर्वहन कर रही थी। 'सुखमनी' उसके हाथ में बहुत स्वाद था, खाना तो इतना बढ़िया और स्वादिष्ट बनाती थी कि वो सभी के मन में एक जगह बना चुकी थी। चाहे जो स्वादिष्ट व्यंजन कोई भी डिश हो तुरन्त हाज़िर। जिस कमरे में पहले वो खाना बनाने जाती झटपट अपनी कार्यशैली से अपने कामों को पूरा कर देती जिससे मालिक उसके ऊपर डिपेण्ड हो गये थे। सबसे पहले वो मिसेस ममता के यहां जाती है। ममता जी, वो भी बहुत ही शालीन महिला थीं। उसके कामों से खुश रहती थी। वो किसी प्राइवेट फर्म में काम करती थीं, जल्दी—जल्दी वो नाश्ता करने के बाद ऑफिस निकल जाया करतीं थी। साहब को

नाश्ता और लंच तो उसे ही देना होता था। साहब पुलिस विभाग में कार्यरत् थे।

साब, उससे अक्सर कहते थें कि सुखमनी जब किसी वस्तु की जरूरत हो तो हमें जरूर बताना। सुखमनी अपना सिंर नीचे झुकाकर कह देती थी कि साब नहीं सब कुछ है, अपने कार्य को निपटाने में लग जाती थी। उसी कमरे से सटे हुए कमरा नं 202, 203, 206 व 209 सभी कमरों में हर समय वो चकरघिन्नी की तरह नाचा करती थी।

सभी लोगों का जैसे उसने मन ही जीत लिया हो। सभी उसकी बड़ी तारीफ करते थे। वो बहुत ही शालीन लड़की थी। सादे कपड़ों में लम्बे–लम्बे बाल छरेरी बदन की थी। आंखों में ममता की छलकती हुई आभा थी वो। कभी–कभी तो रेनू मालकिन के साथ सब्जी लेने भी जाया करती थी। दोनों में बहुत तालमेल था कहीं से भी वो एक घर की सदस्य नहीं लगती थी, पर पिताजी के कारण आज भी कर्ज़ से लदी थी वो। उसके पिता का नाम आनंद था वो बहुत ही शराब पीते थे। थोड़ी –थोड़ी बातों में वो, अरे कभी–कभी तो वो मां को पीटने लगते थे। पूरी उम्र वो नशे की गंगा में नहाते रहे। मैं तो केवल 3वर्ष की ही थी। मां पास की एक फैक्टरी में उस समय काम करती थी। उसी से ही घर का खर्चा चला करता था। पिछले वर्ष फेफड़ों के रोग से ग्रसित होने के कारण नहीं रहे।

खाना–खाने के उपरान्त मां अपने घरेलू कामों में लग जाती है वो काम पर चली जाती है। वो पास ही के पारस अपार्टमेण्ट में 3–4 घरों में खाना बनाकर अपनी जीविका का निर्वहन कर रही थी। 'सुखमनी' उसके हाथ में बहुत स्वाद था, खाना तो इतना बढ़िया और स्वादिष्ट बनाती थी कि वो सभी के मन में एक जगह बना चुकी थी। चाहे जो स्वादिष्ट व्यंजन कोई भी डिश हो तुरन्त हाज़िर। जिस कमरे में पहले वो खाना बनाने जाती झटपट अपनी कार्यशैली से अपने कामों को पूरा कर देती जिससे मालिक उसके ऊपर डिपेण्ड हो गये थे। सबसे पहले वो मिसेस ममता के यहां जाती है। ममता जी, वो भी बहुत ही शालीन महिला थीं। उसके कामों से खुश रहती थी। वो किसी प्राइवेट फर्म में काम करती थीं, जल्दी–जल्दी वो नाश्ता करने के बाद आफिस निकल जाया करतीं थी। साहब को नाश्ता तो लंच तो उसे ही देना होता था। साहब पुलिस विभाग में कार्यरत थे।

घर की समस्याओं को देखकर पेट की भूख शान्त करने के लिए सुखमनी को घर के बाहर निकलना पड़ा। कभी घर–घर जाकर खाना बनाने का काम करने लगी है। सोच में डूबी सुखमनी रेनू मालकिन के यहां खाना बनाने में लगी है। रेनू जी के पति विदेश में ही रहते थे, और वे फिल्म लाइन से जुड़े थे। अक्सर ही उनके घर में आने–जाने वालों का तांता लगा रहता था कई बार तो रेनू मालकिन घर वापिस ही नहीं होती थी। शूटिंग की वजह से उन्हें कभी–कभी आने में देर हो जाती है। जीवन के विभिन्न रंगों को जीने का हर एक का अलग तरीक़ा होता है। वो हर बात को गंभीरता से समझती है। कभी–कभी तो उसे भी कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जितनी बातें उतने रंग। हर दिन वो सुबह से शाम तक अपने कामों को तल्लीनता से करती रहती है। कभी–कभी तो उसको आने में भी देर हो जाती थी कभी–कभी उसकी मां उसका इन्तज़ार करती रहती है कि जवान बिटिया है लेकिन मना करती है वो आख़िर क्या करे।

सुखमनी को मेहनत से काम करना बहुत पसन्द था वो खाना बनाने में भी हर व्यंजन को स्वादानुसार बख़ूबी बनाती थी। आज रात बहुत देर हो गयी थी। सुखमनी घर लौट रही थी सुखमनी का घर थोड़ा दूर था। गली में थोड़ा अंधेरा सा हो गया था। बुग्गन भी गांव से सटे ही रहता था। उसे रास्ते में मिल गया, सुखमनी कहां से आ रही हो।

बुग्गन ने कहा–आओ मेरी गाड़ी में बैठो, पहुंचा दूं। तुम्हारे तो भाव ही नहीं मिलते कभी –कभी तो मौका दे दिया करो। थोड़ा हम भी शौक़ पूरा कर लें।

सुखमनी अन्दर से भयभीत हुई लेकिन अपने आत्मबल को और भी बढ़ाते हुए बोली। उसके ह्रदय में एक ज्वाला जल गयी, उसने बुग्गन से कहा–देखो बुग्गन हम तुम्हें कई बार कह चुके हैं कि मेरा पीछा मत किया करो लेकिन तुम हो तो मेरी बात नहीं मानते। मुझे कहीं नहीं जाना है। देखो मेरा

रास्ता छोड़ दो, मुझे देर हो रही है। उसने आंख तरेर कर कहा।

सुखमनी ने जल्दी–जल्दी रास्ता को तय करना चाहा, अपनी गति को और भी बढ़ा दिया, वो मन ही मन यह सोच रही थी कि मैं एक दिन इस बुग्गन को जरूर मज़ा चखाऊँगी। उसकी आंखें प्रतिशोध से जली जा रही थीं।

सोच में डूबे ही उसने अपनी यात्रा पूरी कर ली। जल्द ही अपने घर के निकट पहुंच गयी। घर में सन्नाटा सा लग रहा था। घर के दरवाजे खुले ही थे। शायद मां को इन्तज़ार करते–करते झपकी लग गयी थी । उसने जल्द ही अपने कपड़े बदले और मां को आवाज दी।–मांऽऽऽ मां ने आंखें खोली–कहा बिटिया बहुत देर लगा देती हो। – मां ने कहा मेरा माथा दुःख रहा है।

सुखमनी ने माथे पर हाथ रखा तो मां को तो तेज़ बुखार लग रहा था। सुखमनी बोली–मां अरे मां ! आपको बुखार है, मैं जल्दी से जाती हूं दद्दू से दवाई ले आती हूं और बाहर निकल जाती है। दरअसल, दद्दू एक वैद्य थे वो हल्की–फुल्की दवाइयों को देकर ठीक कर देते थे। वो दौड़ती–दौड़ती दद्दू के पास पहुंचती है।

दद्दू दवाइयां जड़ी–बूटियां पीस रहे थे। सुखमनी को देखकर अचम्भित हुए ....। दद्दू ने कहा–अरि बिटिया क्या हुआ इतनी रात गये कइसे आना हुआ। तुम इतनी घबराई सी क्यों हो। सुखमनी बोली–वो थोड़ा घबराई सी थी। आख़िर मां के अलावा कोई भी उसका नहीं था जिससे वो सुख–दुःख बांट सकती थीं उसने कहा कि दद्दू मां को तेज़ बुखार आ गया है। सो काम से लौटी तो जल्दी से दवाई लेने आ गयी। दद्दू ने कहा–बिटिया अभी मैं दवाई बना देता हूं। जल्द ही ठीक हो जायेगी। तुम बिल्कुल परेशान न हो। सुखमनी ने कहा–ठीक दद्दू सुखमनी दवा लेकर घर आ गयी। उसने मां को दवा खिलाई। वो रात भर मां के पास ही बैठी रही। और मां से कहती है कि मां आराम करिये। उसने मां से कहा–मां कुछ खा लीजिये।

मां ने कहा–नहीं बिटिया मैं कुछ नहीं खाऊँगी। पता नहीं क्यूं ऐसा लगता है कि मैं अब ज्यादा दिन नहीं चल पाऊँगी, मां की आंखें भर आयीं मैं सोच रही थी कि तेरे हाथ पीले कर दूं, तो सारी चिन्ता दूर हो जायेगी। मैंने 2 बरस पहले ही से तेरे लिए जोड़ा तैयार करके रखा है। बस जल्दी से तेरा विवाह कर दूं फिर चैन पड़ेगा।

सुखमनी ने कहा–अरे मां आप ये सब मत सोचो खाना खाइये और दवा खाकर सो जाइये। इतना सोचा नहीं जाता है। सुखमनी चूल्हे के पास जाती है। उसने देखा मां के हाथ की बनी रोटियाँ रखी थीं, उसने रोटियाँ निकाली और अचार के साथ खा लिया। उसे अचार बहुत पसन्द था।

मां की आंखें धीरे–धीरे बन्द होने लगी वो मां के चेहरे को देख रही थी। उसके उपरान्त वो बिस्तर पर चली जाती है। वो बहुत ही साहसी थी। वो अपने आत्मबल को क्षीण न होने देगी। उसे अपनी समस्याओं का निर्वहन करना है, व डटकर मुक़ाबला करना है। मां को थोड़ा आराम पलकें बंद होने लगीं थी पलके बंद होने लगी थीं । धीरे–धीरे नींद ने मां को अपने आगोश में ले लिया था।

आज की सुबह वो नहा धोकर मन्दिर जाने की तैयारी में लग गयी थी। मां को चाय पिला, दवा देकर वो भोले नाथ के दर्शन करने के लिए चली जाती है। वो भोले नाथ की भक्त थी अक्सर ही मन्दिर जाती थी। वही। उससे रतन से मुलाकात हुई, रतन बहुत अच्छा लड़का था। वो धार्मिक आयोजनों पर द्वार सजाना, फूलों की सजावट का काम करता था। उसने आंखें खोली, बचपन से मां–पिता के प्रेम से वंचित रहा सुखमनी को वो बहुत ही प्रेम करता था। आज जब सुखमनी मंदिर आयी तो रतन उसे देखता ही रहा। उसकी आंखों में सुखमनी के प्रति बहुत आदर था। उसकी आंखें सुखमनी के प्रेम से अभिभूत थीं।

रतन ने पूछा कि क्यों सुखमनी ? मेरी याद नहीं आती सुखमनी ने उसकी ओर देखा–बस सर झुकाकर उत्तर दिया कि तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रही हूं। रतन ने कहा–तो फिर क्यूं ? हमसे मिलने नहीं आती। सुखमनी ने कहा–मिलना तो चाहती हूं, आगे......आपको पता है पर सबसे पहले हमें उन समस्याओं को दूर करना है जो मेरे सामने हैं। ठीक–रतन ने कहा। मैं तुमसे बाद में मिलती हूं। फिर समय निकालकर बात करते हैं। ठीक है रतन अभी जल्दी है।

सुखमनी मन ही मन रतन से प्रेम के धागे से बंध चुकी

थी उसने अपने ह्रदय में रतन के प्रेम को कोमलता से पिरो कर रखा था। उसने सोचा उसे जो रंग रतन को पसन्द था। उसी रंग का सूट पहनकर वो काम पर निकलेगी। काम से निकलने से पहले उसने मां के सर पर हाथ फेरा और कहा –मां मैं काम पर जा रही हूं, खत्म होने पर जल्द ही आ जाऊँगीं।

सुखमनी आज बहुत सुन्दर लग रही थी और साथ ही मन के गलियारे में भी कोई उसकी छत बन कर उसके सामने आ गया था। वो रतन के सात्विक प्रेम में वो डूब चुकी थी। लिफ्ट से वो उस कमरे पर जाती है जहां से उसके बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। मालकिन भी उसको बहुत मानती थी। वे बेल बजाती हैं, दरवाज़ा खुलता है तो साब ही दरवाज़ा खोलते हैं।

आओ सुखमनी–साब ने कहा अरे साब नमस्ते–सुखमनी ने कहा नमस्ते, साब मैंम कहाँ हैं आज क्या बनाना है सुखमनी ने कहा। साब ने कहा मैंम नहीं है वो आज बहुत दूर हैं। मुझे भी ऑफिस निकलना है मेरे लिए कुछ बना दों साब ने उसकी ओर देखते हुए कहा साब मैं क्या जाऊं साब ने उत्तर दिया अरे सुखमनी आज तो बहुत अच्छा दिन है साब ने सुखमनी का हाथ पकड़ लिया सुखमनी ने कहा– अरे साब मुझे जाने दीजिए साब ने कहा–अरे तुम्हें कैसे जाने दूँ तुम्हें मैं मालामाल कर दूंगा आओ तुम मेरे पास आ जाओ खुशी–खुशी वैसे भी तुम बहुत सुन्दर हो मैं तुम्हें बराबर ही देखा करता हूं और आज तो तुम हमें बहुत भा रही हो, इतना सुन्दर रंग जो तुमने पहना है। तुम्हारे ऊपर बहुत अच्छा लग रहा है सुखमनी तुम बहुत सुन्दर हो सुखमनी की आंखें गुस्से से लाल हो गयीं थी। उसकी आंखों में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी थी आज उसे किसी भी बात का भय नहीं था उसने साब की आंखों में हवस की चाह देखी। सुखमनी पहले तो चिल्लाई मुझे जाने दीजिए। मुझ पर रहम करिये। पर, उसके मना करने के बावजूद वो नहीं मान रहे थे।

घर की समस्याओं को देखकर पेट की भूख शान्त करने के लिए सुखमनी को घर के बाहर निकलना पड़ा। कभी घर–2 जाकर खाना बनाने का काम करने लगी है। सोच में डूबी सुखमनी रेनू मालकिन के यहां खाना बनाने में लगी है। रेनू जी के पति विदेश में ही रहते थे, और वे फिल्म लाइन से जुड़े थे। अक्सर ही उनके घर में आने–जाने वालों का तांता लगा रहता था कई बार तो रेनू मालकिन घर वापिस ही नहीं होती थी। शूटिंग की वजह से उन्हें कभी–कभी आने में देर हो जाती है। जीवन के विभिन्न रंगों को जीने का हर एक का अलग तरीक़ा होता है। वो हर बात को गंभीरता से समझती है। कभी–कभी तो उसे भी कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जितनी बातें उतने रंग। हर दिन वो सुबह से शाम तक अपने कामों को तल्लीनता से करती रहती है। कभी–कभी तो उसको आने में भी देर हो जाती थी कभी–कभी उसकी मां उसका इन्तजार करती रहती है कि जवान बिटिया है लेकिन मना करती है वो आख़िर क्या करे।

वो इस पार से उस पार कमरे में अपने को बचाती रही। कई बार तो उसने घर में रखे सामानों से अपने को बचाने का प्रयास किया साब ने कहा–यहां कौन सुनने वाला है। सुखमनी मना करती रही और साब ने जबरदस्ती की और उसे अपनी हवस का शिकार बनाना चाहा अब तो हद ही पार हो चुकी थी सुखमनी को बचाने वाला कोई नहीं था। और फिर क्या था वह किसी भी बात को न सोचते हुए अपनी आत्म रक्षा के लिए टी.वी. पर रखे गुलदस्ते को साब के माथे पर प्रहार कर देती है। माथे पर मारने के बाद उनके माथे से खून की धार बहने लगी। वो जल्दी से दरवाज़ा खोलती है और वहां से बाहर आती है।

लिफ्ट के बटन को दबाती हुई। एक नयी उजास में प्रवेश करती है। लेकिन आज रात उसके जीवन का नया उजेरा था। कल का उसे पता नहीं। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। इस अंधेरी रात में कुत्ते भौंक रहे थे। सुखमनी के घर की जलती लालटेन की रोशनी उसके आने का ही इन्तज़ार कर रही थी। ◆

पता : 356/24, आलम नगर रोड, बावली चौकी, लखनऊ–226017

मो. : 8934884441

कविता विकास की पाँच कविताएँ

डॉ. कविता विकास

देश का भविष्य

आठ बजे का समय है।
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।
पीठ पर किताबों का बोझा लादे।
अब वे पढ़ेंगे–लिखेंगे,
खेलेंगे–कूदेंगे,
आखिर वे देश के भविष्य हैं।
उन्हें पढ़ना जरूरी है
जीवन का ज्ञान पाने के लिए।
दो बजे स्कूल से लौट कर
जल्दी–जल्दी दो–चार
निवाले मुँह में डाले
वे फिर निकल गए।
बच्चे कोचिंग करने जा रहे हैं।
पीठ पर सपनों के बोझ लादे।
सपनों का बोझ जीवन की पढ़ाई से
जब–जब भारी होता है,
देश का भविष्य सो जाता है
उस गहरी निद्रा में
जहाँ किसी प्रकार का बोझ नहीं है।

युद्ध और बच्चे

उनकी आँखें स्याह हैं
डर है, खौफ है उनमें
वे रो नहीं रहे,
कुछ ढूँढ रही हैं आँखें।
उनकी धड़कनें भी उफान पर हैं।

रुक–रुक कर दोनों बच्चे
एक–दूसरे को पकड़ लेते हैं,
कहीं कोई एक खो न जाए।
उन्होंने खिलौने ही देखे थे अब तक,
जिंदगी नहीं।
अबोध और निःसहाय बच्चे
चले जा रहे हैं सड़कों पर, दिशाहीन
मिसाइलों की आग में
अपने अंत का इंतज़ार करते हुए।

नदी सुहागिन हो गयी है

वह बँध नहीं सकती तालाब की तरह
पंकिल भी नहीं हो सकती झील की तरह
वह जोश से लबरेज़ चल पड़ी है
अपनी मंजिल की ओर।
नदी लड़की है।
आँखों में उसके आकाश झाँक रहा है
दमक रही है वह नील वसन में
अनगिनत दोने में रखे दीये
सिंदूर, अक्षत, फूल और पान
प्रवाहित किए जा रहे हैं
नदी सुहागिन हो गयी है।
कुछ देने के दर्प में इठला कर
आगे बढ़ती है और
अपने दोनों किनारों पर बसे बच्चों को
अपना रसपान कराती हुई
जीवन देती जाती है।
नदी लड़की से माता बन गयी है।

तुलसी का चौबारा

घर में उठती दीवारों के बीच
आँगन का बँटवारा यूँ हुआ
कि बस तुलसी का चौबारा ही
किसी का नहीं हुआ।
पुरुषों के अहं में
खुद को सीमित करती औरतों का
जब कमरे के एकांत में दम घुटता
तब तुलसी को दीप दिखाने के बहाने
हर शाम अपने–अपने दरवाज़ों
से निकल आतीं।
आँचल से सर ढाँपे, कनखियों से
एक–दूजे को देखतीं
दीदी–जिज्जी, भाभी
कुछेक पलों में ही अपने
दुःख–सुख बाँट लेतीं
बंधन–बंदिशों में भी कुछ यूँ
ये औरतें,अपने हँसने–बोलने का
माध्यम ढूँढ लेती हैं।

औरत

आज बच्चे बिना टिफिन के
विद्यालय गए हैं।
पुरुष उधड़ी हुई कमीज में
दफ्तर गए हैं।
भीतर बिस्तर बेतरतीब है
रसोई बिखरी पड़ी है
कचरे के डिब्बे से
भीषण बदबू आ रही है।
यह किसी आपातकालीन स्थिति से
उपजी कोई दुर्व्यवस्था नहीं है
घर की औरत बीमार है।

◆

**पता : सेक्टर–121, होम्ज़–121, फ्लैट नं.–टी/1801,
नॉएडा–201301, उत्तर प्रदेश
मो. : 9431320288**

अशोक अंजुम के दोहे

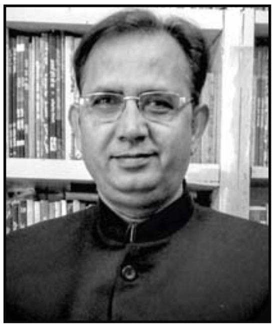

अशोक अंजुम

जादू–सा रचने लगा, ये बसंत ऋतुराज
मैं किस पर्दे में छिपूँ, पूछ रही है लाज

ऋतु बसंत ने कर दिया, सबको मालामाल
वे भी गदराने लगे, जो थे कल बदहाल

जो संयम के थे धनी, वे भी हुए हलाक
हर बिरबा पहने खड़ा, रंगों की पोशाक

स्वागत में ऋतुराज के, महके तोरणद्वार
बहुविधि धरती ने किया, रंगों से श्रृंगार

सरसों खिलती खेत में, मन में महके मीत
गहरी होगी और भी, इस मौसम में प्रीत

तन–मन में होने लगी, मीठी–मीठी पीर
अन्दर तक धँसने लगे, अब अनंग के तीर

कामदेव ने इस तरह, गुपचुप किया प्रबंध
टूट गई इस बार फिर, संयम की सौगंध

खास नहीं थी कल तलक, रूपसि लगती आज
जादू ये ऋतुराज का, बदले सब अन्दाज़

सुर छेड़े शीतल हवा, धरती गाये गीत
जीत हार में ढल गई, और हार में जीत

जंगल में इतरा रहा, फूला–फला पलाश
मन में सिहरन हो रही, आ जाओ प्रिय पास

मौसम की मनुहार पर, बिरहन भरे उछाह
पल–पल गहराने लगी, पिया–मिलन की चाह

कैसा जादू रच रहा, मौसम का ये रूप
हवा सुगन्धित हो गयी, मीठी–मीठी धूप

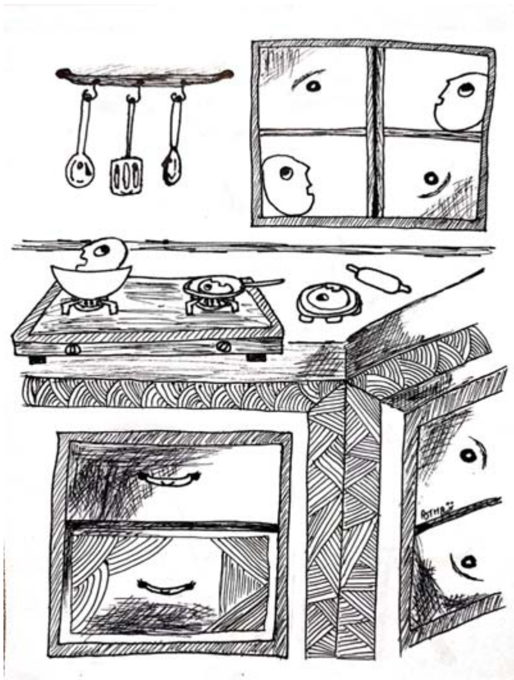

हर क्यारी पहने खड़ी, फूलों के परिधान
नहीं ध्यान में अब रमे, संतों का भी ध्यान

कौन चितेरा कर रहा, मौसम को खुशरंग
हर दिल में हलचल करें, मीठे कई प्रसंग

फिर भँवरों की रैलियाँ, फिर बगिया में जोश
देख–देखकर तितलियाँ, खो बैठी हैं होश

रे बसंत तू धन्य है, रचे अनोखे सीन
पात–पात मदहोश है, डाल–डाल रंगीन

इस बसंत का क्या कहें, होंगे फिर आखेट
जो अर्से से बन्द था, खुला आज वह गेट

◆

पता : स्ट्रीट–2, चन्द्र विहार कॉलोनी (नगला डालचंद)
क्वार्सी बायपास, अलीगढ़–202002
मो. : 09258779744

विमलेश शर्मा की तीन कविताएँ

डॉ. विमलेश शर्मा

पतझड़ के दिन और प्रेम

ये दिन पतझड़ के हैं
मन के पीले पड़े पत्तों से हैं
गहरी चुप्पियों में डूबे रुदन का है
लुक–छिप आँखों के चुप–चुप बरसने का है!

पर मैं अब भी रोज ही
तुम्हारे होठों पर अपने लिए खिला गुलाब खोजती हूँ
खोजती हूँ कि इस अनमनेपन के बीच भी
तुम मुझे बचा लाओगे डूबने से
कि तुम मेहताब बन उस सपाट बियाबां में चमकोगे
और कहोगे सुन बहुत हुआ, मैं बस तुम्हारा हूँ

तुम्हारी वफा पर आई शिकन से
हर पल हरसिंगार सी झरती हूँ
अमासी रात–सी गुज़रती है ज़िंदगी की शाम
और उतराती रक्तचाप की धड़कन
नसों परचुप नदी–सी खिलती है
ठीक उन्हीं ऊभ–चूभ पलों में
तुम जेहन पर बिथोवन के संगीत सा दम भरते हो

जानने वाले जानते हैं ठीक–ठीक
कि प्रेम का पर्याय प्रीत नहीं
कि प्रीत का पर्याय रीत नहीं
कि रीत यहाँ दुःख की ही बसी है बस

तुम से दूर होना विकल्प नहीं रखा मैंने
तुम्हारे साथ बस साथ ...बस साथ...साथ
उसके अलावा कुछ नहीं
बस कुछ भी नहीं
जिद के अबूझ अलाव पर
यही इक नाजुक, कपासी ख्वाब संजोया है मैंने!

जीवन–साखियाँ

जिसने दुःख दिया
उसे इतना सुख देना
कि वो उससे बाहर निकलने को बेचैन रहे

जिसने छल किया
उसे इतना विश्वास देना
कि वो उसे खंडित ना कर पाए

जिसने झूठ के किले बनाए
उसे सच्चाई की बंदिशें देना

जो कठोर मन का धनी हो
उसे छलछलाती नदी में भिगोना

और जिसने प्रेम दिया हो
उसे उस मन के सामने रखना
जो बेहिस डूबना जानता है

जो मरकर जीना और जीकर मरना जानता हो!

सबद–संजीवन

समय के छूटे सिरे
उँगलियों के पोरों में कहाँ समा पाते हैं

एक उम्र की गुज़र को
ख्वाब कब तक सँभाले रखते हैं

चौंक के भीतर के इंतज़ार को
कान कहाँ भाँप पाते हैं

झरते शजर पर
रुत कहाँ कोई रोक लगाती है

जाल में कैद रोशनी के गुच्छे
जेहन में कहाँ देर तलक अटक पाते हैं

पर घास होकर भी
वो कास के फूल कहे जाते हैं
यूँही चंद आज़ाद ख़याल ही
तारीख़ों में बसा इतिहास बना पाते हैं!

◆

पता : 32, शिवा कालोनी, अजमेर–305001 (राज.)
मो. : 9414777259

इतिहास से निकली कहानियाँ

❑ डॉ. उर्मिला साध

तवायफ, वेश्या, बाजारू औरत, नाचने गाने वाली, ये सारे वो सम्बोधन हैं, जो गाली से कम नहीं। अगर हम बात करें तो वेश्या या तवायफ, एक गायिका, नर्तकी व मौसिकी की उम्दा फ़नकार होती थी। पर मुगलकाल के पतन और ब्रिटिश हुकूमत ने उसे 'वेश्या' से वेश्यावृत्ति में धकेल दिया। हर आदमी मेहनत कर अपने शारीरिक श्रम से ही कमाता है और वेश्या भी मेहनत कर अपने शारीरिक श्रम से ही कमाती है। पर वह कामकाजी औरत नहीं, धन्धा करने वाली औरत कहलाती है। सही और ग़लत का तो पता नहीं पर वेश्याओं ने साहित्य, सिनेमा, संगीत को अब तक दिया ही दिया है। सब देकर समाज का बहुत सा विष पी लिया है। 'गंगूबाई काठियावाड़ी' फिल्म इसका एक सबूत है। किस तरह एक लड़की प्यार में पागल हो, अपने सपनों में रंग भरने अपने ही प्रेमी के साथ फिल्मों में नाम और पैसा कमाने अपना घर–बार सब छोड़कर आती है और कैसे उसका प्रेमी इसे बेचकर अच्छा खासा पैसा कमा लेता है। दलदल में फंसी मछली की तरह वो न तो जी पाती है और न ही मर सकती है।

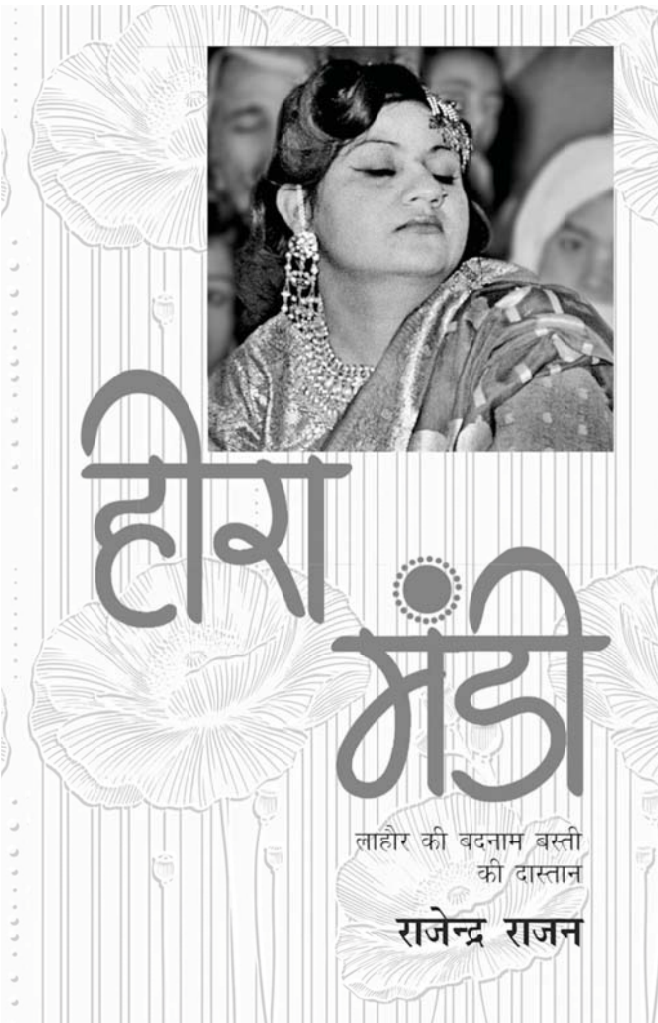

धीरे–धीरे वक्त के साथ समझौता कर लेती है ''कुँवारी आपने छोड़ी नहीं और श्रीमती कभी किसी ने बनाया ही नहीं, यहाँ बैठे सबका कोई न कोई धंधा होता है। कोई बिजनेस करता है। कोई डॉक्टर। दिमाग वाला दिमाग बेचता है। हमारा धंधा शरीर बेचने का है तो हम शरीर बेचती हैं, बदन तुड़वाकर काम करे तो साहिब, क्या गलत करते हैं? फिर भी हमारा ही धंधा गलत क्यूँ? हमारा ही मोहल्ला बदनाम क्यूँ? हमारे बिना तो स्वर्ग भी अधूरा है। देखा जाए तो आप लोगों से

ज्यादा इज़्ज़त है हमारे पास। पूछो कैसे, ''आपकी इज़्ज़त इक बार गयी तो गयी'' 'हम तो रोज़ रात को इज़्ज़त बेचती हैं, पर साली खत्म ही नहीं होती।'

और देखिए हैरानी इस बात की है कि गंगूबाई की रक्षा करता एक मर्द (अजय देवगन) ही है क्योंकि चाहे बहन हो या बेटी या फिर तवायफ आदमी की सुरक्षा के बिना है वो लाचार और अधूरी। कोठेवालियों को तो स्कूल में भी जगह नहीं क्योंकि माँ का नाम काफी नहीं है। और बाप का नाम इनके पास है ही नहीं। न पढ़ने का हक है न प्यार करने का, न इज्ज़त से जीने का।

संजय लीला भंसाली ने बड़े ही रोचक और हल्के–फुलके अंदाज में एक गंभीर संदेश अपने दर्शकों को दिया है क्योंकि इनका मानना है जब शक्ति, संपत्ति, सद्बुद्धि सब स्त्रियाँ है, तो इन मर्दो को किस बात का गरूर है और सजा मिलती है बेगुनाह लड़कियों को। गंगूबाई काठियावाड़ी के अलावा भी कई ऐसी फिल्में है जो यथार्थ के धरातल पर हमें समाज के स्याह चेहरे से रू–ब–रू करवाती है जैसे मंडी (1983) शबाना आजमी, स्मिता पाटिल, नीना गुप्ता, नसीरूद्दीन शाह। गिद्ध (1984) स्मिता पाटिल, ओमपुरी, नाना पाटेकर। जहाँ मंडी कोठे को राजनीति के परिदृश्यों को दिखाने वाली फिल्म है तो 'गिद्ध' में देवदासी प्रथा की आड़ में महिलाओं का शोषण बताया गया है।

संजय लीला भंसाली ने बड़े ही रोचक और हल्के–फुलके अंदाज में एक गंभीर संदो अपने दर्शकों को दिया है क्योंकि इनका मानना है जब शक्ति, संपत्ति, सद्बुद्धि सब स्त्रियाँ है, तो इन मर्दो को किस बात का गरूर है और सजा मिलती है बेगुनाह लड़कियों को। गंगूबाई काठियावाड़ी के अलावा भी कई ऐसी फिल्में है जो यथार्थ के धरातल पर हमें समाज के स्याह चेहरे से रू–ब–रू करवाती है।

अगर यहाँ 'चाँदनी बार' का ज़िक्र न होगा तो बात पूरी नहीं होगी। मुमताज के रोल में तब्बू ने कमाल का अभिनय किया। अपने ही चाचा द्वारा दुष्कर्म और वेश्यावृति में धकेली जाती है। 'चमेली' 'रज्जों 'लक्ष्मी', बेगम जान, 'पाकीजा' ऐसी फिल्में हैं जो हमारे सामने समाज की सच्चाई की पोल खोल कर रख देती हैं।

राजेन्द्र राजन ने 'हीरा मंडी' उपन्यास में बखूबी दिखा दिया है कि किस तरह दो युवक हीरा मंडी (तवायफों की बस्ती) को उम्र के अलग–अलग पड़ावों पर किस तरह देखते हैं। छोटा सा यह उपन्यास बड़े ही नाटकीय ढ़ंग से प्रस्तुत होता है– दो नौजवान युवकों को हीरामंडी ले जाने को आतुर एक दलाल जो जैसे अंधेरे में अपना नाम पुकार कर खुद को ही ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा है? आज़ादी से लगभग बीस साल पहले का भारत जो अंग्रेज़ों के कारण धीरे–धीरे आधुनिकता के रंग में खुद को सराबोर कर रहा था, इस उपन्यास में शिद्दत से साकार हुआ है। 'टिब्बी यानी हीरामंडी' लाहौर का रेड लाइट एरिया यहीं से शुरू होती है उपन्यास की कहानी। उपन्यास में ऐसे कई संवाद हैं जो इस बस्ती का सही मायने बताते हैं जैसे "बाऊजी, की गल करदे हो। तवायफ की भी इज्जत होती है, दलाल की भी। हर कोई वॉइसराय या कलेक्टर तो बन नहीं सकता (फज़ल)! लाहौर की हीरामंडी भी शायद उतनी ही पुरानी है जितना लाहौर। बाल्मीकि ने कब रामायण लिखी कोई नहीं जानता। लेकिन हिन्दुओं का मत है कि लाहौर सतयुग में बसा। ऋग्वेद में इस शहर के नाम का ज़िक्र है। लाहौर एक ऐसी मिसाल के रूप में था जो हर धर्म, संस्कृति व कला को अपने भीतर समेटे सांझी विरासत व गंगा–जमुनी तहज़ीब के लिए दुनिया भर में अलग महत्व रखता था। यहां तक कि इसे 'पूर्व का पेरिस' तक कहा गया।"

अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण के बाद औरत की इज़्ज़त और आबरू की कोई कीमत न रही। टिब्बी या हीरा मंडी केवल जिस्मफ़रोशी का ही अड्डा बनकर रह गया। यह अधूरा सच है। यह उस समय की तहज़ीबयाफ्ता बस्ती हुआ करती थी जिसमें शहर के रईस लोग अपने नौजवान बच्चों को तहज़ीब और तमीज़ सिखाने भेजते थे। पर धीरे–धीरे

हालात बदलते गये। शराब, शबाब व शान–शौकत में डूबने वाले रईसों ने इसे कुछ और ही बना दिया और शाही मोहल्ला केवल अय्याशी का अड्डा बन गया। राजेन्द्र जी ने उस समय के हिन्दुस्तान के संगीत को लेकर दीवानगी को भी बड़ी खूबसूरती से अपने उपन्यास में पेश किया है।

बेगम उमरा जिया, जद्दन वाई, नूरजहाँ, बेगम अखतर, जोहराबाई ऐसे बड़े नाम हैं जो इन्हीं घरानों से निकलर फिल्मी दुनिया के नगीने बने। अपनी अदाकारी और गायकी के दम पर इन्होंने अपना दबदबा फिल्म जगत में कायम किया। जद्दन वाई मशहूर फिल्म अभिनेत्री नरगिस दत्त की मां थीं। बड़े ही मजे की बात है कि इस समय फिल्मों में आना कोठे पर आने से भी बुरा माना जाता था।, 'इशरत, तू समझती क्यों नही। फिल्मों में पैसा ही पैसा है। उमर ज़िया बेगम का एक भी गाना हिट हो गया तो रॉयल्टी में हज़ारों, लाखों कमा कर तेरी झोलियाँ भर देगी वह''। 'जा–जा ये सब्ज़ बाग किसी और को दिखाना। फिल्मों में काम करने वालों को हर कोई बुरी नज़र से देखता है। हम इज्ज़तदार लोग हैं। तवायफ़, मुजरेवाली या फिर बदन बेचने वाली औरत की भी इज़्ज़त–आबरू होती है। बड़े – बड़े नवाब, सेठ, साहूकार, ज़मींदार, अमीरजादे यूँ ही नही खिचें चले आते मेरे कोठे पर। लड़की के गले में सुर न हो और पैरों में लचक न हो तो घुंघरूओं की कोरी झनक पर कोई मेहरबान नहीं होता।'

दिलकश सुरीली आवाज़। एक दफ़ा सुनने के बाद जादू–सा जगा दे। ये फिल्में न बनती तो सहगल जैसा बे–नियाज हीरा कलकत्ता की गलियों में साड़ियाँ ही बेचता रहा। लाहौर में तवायफों के कोठों के नाम पर आप भले ही नाक–भौं सिकोड़ने लगें, लेकिन गीत–संगीत की ये महफिलें एक बड़े मयार को विकसित करने, इसकी बुनियाद को पुख्ता करने में मददगार साबित हुईं। हिन्दुस्तान के संगीत घराने इन्हीं कोठों में फल–फूलकर आबाद हुए। कहानी धीरे–धीरे कोठे, अखबार, संगीत सिनेमा से होती हुई भारत–पाक विभाजन पर जाती है। जहाँ उनकी सरदारी बेगम कहती है, 'तवायफें या जिस्म का सौदा करने वाली लड़कियाँ अमीरजादों के टुकड़ों पर नहीं पलतीं। खैरात नहीं बांटते हैं ये हरामजादे। पाँव में छाले पड़ जाते हैं मुजरे पेश कर–कर। खून पसीना एक करना पड़ता है। हिन्दुस्तान में कोठे ही वो जगहें हैं, जहाँ सभी मज़हब एक हैं।"

इस उपन्यास को पढ़ते हुए मुझे लगा राजेन्द्र राजन ने हीरा मंडी के लिए जो भाषा गढ़ी है, हीरामंडी उपन्यास इसी भाषा में लिखा जा सकता है। यद्यपि हीरा मंडी हमारे समाज का ही अंग है। लेकिन हर मामले में सामान्य समाज से भिन्न हैं। भाषा भी उनकी भिन्नता को रेखांकित करती है, क्योंकि अभिव्यक्ति का स्वरूप किसी वर्ग को विशेष पहचान देता है। इस उपन्यास की भाषा हीरामंडी के समाज को बिल्कुल अलग पहचान देती है, इसलिए इसकी रचनात्मकता उपन्यास को विशिष्टता प्रदान करती है तो 'इडिया टी हाउस का जिक्र उपन्यास को एक नया रंग देता है।

हीरामंडी में आने वाली हर लड़की की अपनी कहानी है–कोई बेच दी गई, किसी ने धोखा खाया, किसी को पेट भरने के लिए आना पड़ा और कईयों का तो पुश्तैनी काम ही यही था। जोहरा बाई, तमंचा बेगम। इन सभी लड़कियों को नाच गाने के ज़रिए महफिल में तशरीफ लाए लोगों को खुश करना होता था। फजल कहता है, ' बाऊजी। ये सब गुड़ की डलियाँ है। शहद की तरह मीठीं, गुलाबी गाल, रेशमी बाल। वे इस धंधे में नयी है लेकिन बर्ताव और इश्क फरमाने में पूरी तरह माहिर। तुम जन्नत का स्वाद चख सकते हों...'' पहली बार जो टिब्बी के कोंठो पर पाँव रख लेता है, बार–बार आता है। फजल का किरदार पूरे उपन्यास को चार चाँद लगा देता है किस तरह दलाल का काम करने वाला फजल एक दिन ठाठबाट व ऐशो–आराम की ज़िन्दगी जीता है'' जिस्मफरोशी हर आदमी की कमजोरी है। हर तबके को खुश रखता है। हीरामंडी के कोठों की हर बाई इस पर जान छिड़कती है। इसी के

दमखम पर इनके कुनबे आबाद हैं। वो हर महीने फ़ज़ल को मोटी रकम अदा करती हैं।''

संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज में सरताज नामक एक किरदार ने सही ही बोला है कि अगर आप चाहते हो कि हीरामंडी जैसी जगह न हो तो सारे नबाब वहाँ जाना ही बंद कर दें। आप ही बताइये शराब छुड़ाना आसान है या दुनिया के सारे ठेके बंद करवाना।

"क्यों नहीं। कोठे पर कोई कस्टमर लड़की का मजहब पूछ कर नहीं आता। हर जात, हर बिरादरी, हर मजहब की लड़कियाँ यहाँ पर आती हैं। यही एक जगह है जहाँ सभी धर्मों की लड़कियाँ एक साथ सांस ले सकती हैं।" एक ही संवाद द्वारा जैसे लेखक ने हीरामंडी के फलक को अनन्त विस्तार दे दिया है। खुद उपन्यासकार मानते हैं कि दुनिया की हर औरत इज्जत के साथ अपनी जिन्दगी जीना चाहती है पर दौलत, शौहरत और रसूखवाले उसे हर वक्त बाजारू बनाकर रखना चाहते हैं, हमेशा दो टके की छोकरी और धीरे–धीरे यह हो भी जाता है ये तवायफें औरत से काठ की गुड़ियाँ बन जाती हैं और अपनी आत्मा को गिरवी रख दिन–रात अपने बदन का सौदा करती हैं क्योंकि यह अब समाज का वो अंग है जो सड़ चुका है। कोठे की तवायफों को क्या कोई नौकरी दे सकता है? सभ्य समाज इन्हें कोठे में बंद देखने का ही आदी है। अगर यह सरेआम घूमने फिरने लगें तो कोठे भी बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे। इण्डिया हाउस का जिक्र बड़े ही रोचक ढ़ंग से राजेन्द्र राजन जी ने किया है। वे अपनी बात के साथ उपस्थित होते हैं और समाज की परत–दर–परत उखाड़ते चलते हैं फिर चाहे वह अनमेल विवाह हो या सिनेमा जगत का सच। वो किसी जात या मज़हब से ताल्लुक नहीं रखती। सिस्टम के लिए महज मौज–मस्ती की चीज भर हैं। वेश्या को न तो पाकिस्तान में कोई पनाह देगा न ही हिन्दुस्तान में। हर कौम, हर मुल्क, हर सोसायटी में उसका बजूद नगण्य रहेगा।" यह कह कर उनके सच के सारे कपड़े उतार उसे बीच रास्ते में खड़ा कर दिया जाता है। क्या हीरामंडी जैसी जगह समाज में होने वाले अपराधों को कम करने वाली है। अपनी कुण्ठाओं को शान्त करने के लिए बसाया आदमियों का यह नरक क्यों केवल औरतों को ही इस आग में जलाता रहा है, जैसे सवालों का जबाब देता है यह उपन्यास।

लेखक हीरा मण्डी में न केवल व तवायफ़ों का दुःख ही बता रहे हैं, बल्कि इनकी बदलती स्थिति को भी अंकित करते है, '16 दिसम्बर 1937 को जब लाहौर से पहला रेडियो प्रसारण शुरू हुआ तो शुरूआत तमंचा जान के गीतों से हुई। नूरजहाँ, शमशाद बेगम, चम्पाबाई, उमरा जिया बेगम के फिल्मी और ग़ैर फिल्मी गीतों ने तो सुनने वालों का मन मोह लिया। 'जग्ग जमियां ने मिलण बधइयां'' 'लंध आ रण चानण दा, खैर नाल आ मिल', से लेकर दर्जनों ही ऐसे गीत थे जो देखते–देखते ही लोगों की जबान पर चढ़ गये।''

उपन्यास में कसे हुए, चुस्त संवाद पाठक को मुग्ध कर देते हैं। 'ये सब औरतें काठ की गुड़ियों की तरह है जो अपनी आत्मा को गिरवी रखकर दिन–रात अपने बदन का सौदा करती हैं। नबाब ने तकिए के नीचे रखा रिवॉल्वर निकाला और दनादन गोलियाँ दाग दीं शमशाद के सीने में .. ...'' और पढ़ने वाला पाठक जैसे इस रिवॉल्वर के धुऐं को महसूस ही कर लेता है।

इस उपन्यास को पढ़ते हुए मुझे लगा राजेन्द्र राजन ने हीरा मंडी के लिए जो भाषा गढ़ी है, हीरामंडी उपन्यास इसी भाषा में लिखा जा सकता है। यद्यपि हीरा मंडी हमारे समाज का ही अंग है। लेकिन हर मामले में सामान्य समाज से भिन्न हैं। भाषा भी उनकी भिन्नता को रेखांकित करती है, क्योंकि अभिव्यक्ति का स्वरूप किसी वर्ग को विशेष पहचान देता है। इस उपन्यास की भाषा हीरामंडी के समाज को बिल्कुल अलग पहचान देती है, इसलिए इसकी रचनात्मकता उपन्यास को विशिष्टता प्रदान करती है तो 'इडिया टी हाउस का जिक्र उपन्यास को एक नया रंग देता है। पाठक इस उपन्यास को पढ़कर लाहौर के 'नास्टेलजिया' में डूब जाएंगे, ऐसा मुझे यकीन है। ◆

पुस्तक परिचय : हीरा मण्डी, उपन्यास, प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली–110001

पता : 26 माधव नगर, दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन के सामने, महारानी फार्म जयपुर–302018
मो. : 96103–36999

विजय सिंह का गीत

गीत

हो जाए जग रौशन सारा
तुम ऐसा दीप बनो।
तन मन को झंकृत कर दे
ऐसा संगीत बनो।।

जाति पाँति और धर्म यहाँ
इन्सान को हैं बिलगाए।
मानवता की कीमत को
कोई भी समझ न पाए।
जिसकी धारा में डूबे जग
तुम ऐसी प्रीत बनो।। तन मन को......
झंकृत कर दे
ऐसा संगीत बनो।।

भौतिकता की दौड़ में अंधी
बारूद बनी है दुनियाँ।
काम क्रोध मद लोभ में
ढूँढ़ रहे सब खुशियाँ।
दिल से दिल के तार मिलें
तुम ऐसी जीत बनो। तन मन को......
झंकृत कर दे
ऐसा संगीत बनो।।

बगिया है तुम्हारी प्यारी ये
सींचो इसे खून पसीने से।
बना दो इसको पावन ज्यादा
मन्दिर और मदीने से।
भूल सके इतिहास जिसे न
ऐसा ही अतीत बनो।। (3) तन मन को......
झंकृत कर दे
ऐसा संगीत बनो।।

◆

पता : राजा टोडरमल सर्वेक्षण एवं भूलेख
प्रशिक्षण संस्थाल, उ.प्र., हरदोई
मो. : 9793247142

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख प्रकाशन

उत्तर प्रदेश मासिक	:	समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
नया दौर (उर्दू)	:	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
वार्षिकी (हिन्दी/अंग्रेजी)	:	उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र।

महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.
दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित